ओ३म्

आर्य सेवक

आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ का मुख पत्र

सितम्बर २०१३

ओ३म्

सभा कार्यालय : दयानन्द भवन, मंगलवारी, सदर बाजार, नागपुर (महाराष्ट्र)

www.thearyasamaj.org

वैदिक विनय

अभयदेव विद्यालंकार

अन्य मार्ग नहीं !

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तं आदित्यवर्णं तमसः परस्तात् ।
तमेव विदित्वाऽति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ॥

- शब्दार्थ -

(अहं) मैं (एतं) इस (महान्तं) बड़े महान् (पुरुषं) व्यापक परिपूर्ण पुरुष (परतेश्वर) को (आदित्यवर्णं) आदित्य जैसे स्वयं प्रकाश स्वरूप वाला (तमसःपरस्तात्) और अज्ञान अन्धकार से बिलकुल परे (वेद) जानता हूँ, देख रहा हूँ । (तं एव) उसको ही (विदित्वा) जान कर मनुष्य (मृत्यु) मृत्यु को (अति एति) अतिक्रमण करता है, (अयनाय) अभीष्ट स्थान तक पहुँचने लिये, परमपद पाने के लिए (अन्यः) और कोई (पन्थाः) मार्ग (न) नहीं (विद्यते) है ।

विनय

मैं उस पुरुष को, उस महान् पुरुष को जानता हूँ जो कि सब संसार में परिपूर्ण हो रहा हैं, जो इतना महान् है कि ये सब चराचर सृष्टियां और ये सब ब्रह्माण्ड उसके एक अंश में स्थित हैं । वह परिपूर्ण पुरुष है, वह सब तरह महान् है । मैं उसे देख रहा हूँ, अनुभव कर रहा हूँ । वह अपने प्रकाश स्वरूप में, अपने उज्जवल ज्योतिर्मय रूप में सदा सर्वत्र परिपूर्ण हो रहा है, सदा सर्वत्र भासित हो रहा है । वह तम से सर्वथा परे है, अज्ञान-अन्धकार उस विशुद्ध ज्योति को, उस पवित्र प्रकाश को छू तक नहीं सकते । इस संसार में यदि किसी वस्तु से उसके स्वरूप के प्रति निर्देश किया जा सकता है तो इस जाज्वल्यमान आदित्य को देख लो । वह आदित्य-वर्ण है, प्रचण्ड उज्जवल स्वयं प्रकाशरूप है । हे मनुष्यो ! तुम उसे देखो, उसे जानो । उसे ही जानकर मनुष्य मृत्यु को अतिक्रमण कर सकता है । हे मृत्यु से मारे हुए मर्त्यो ! हे नाना क्लेशों से सताये हुए संसारियो ! तुम उसे क्यों नहीं देखते?उसे देख लेने पर तो, संसार के अन्य क्लेश तो क्या मृत्यु का महा क्लेश भी मिट जाता है । उसे देखकर मनुष्य अमर और अभय हो जाता है । इसलिये यदि तुम सब दुःख भयों से पार होना चाहते हो, इन क्लेश बन्धनों से छुटकारा पाना चाहते हो तो तुम उस व्यापक प्रभु को जानो, उस आदित्य वर्ण को पहिचानो । सुख शान्ति की अभीष्ट स्थिति में पहुँचने के लिये, छुटकारे का महान् सुख प्राप्त करने के लिये, अपने परम अयन को पाने के लिये उस प्रभु को जानने के सिवाय और कोई रास्ता नहीं है, उस पूर्ण पुरुष को देख लेने के सिवाय और कोई मार्ग नहीं है ।

'वेदाञ्जलि' से साभार

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य सेवक

आर्य प्रतिनिधि सभा म. प्र. व विदर्भ का मुखपत्र

वर्ष - ११३ अंक ९
सृष्टि संवत १९६०८५३११४
दयानन्दाब्द - १८९
संवत - २०७०
सन - २०१३, सितम्बर २०१३

प्रधान
पं. सत्यवीर शास्त्री, अमरावती
मो. नं. ०९४२५१५५८३६

मंत्री एवं प्रबंधक सम्पादक
प्रा. अनिल शर्मा, नागपुर
मो. ०९३७३१२११६४

सम्पादक एवं उपप्रधान
जयसिंह गायकवाड़, जबलपुर
मो. ०९४२४६८५०९१
निवास - ५८०, गुप्तेश्वर वार्ड, कृपाल चौक,
मदन महल, जबलपुर

सह सम्पादक
पं. सुरेन्द्रपाल आर्य, नागपुर
मो. : ०९९७००८००७४

सह संपादक एवं कार्यालय मंत्री
अशोक यादव, नागपुर
मो. : ९३७३१२११६३

कार्यालय पता :
दयानन्द भवन, मंगलवारी, सदर बाजार,
नागपुर-४४०००१ महाराष्ट्र
दूरभाष क. ०७१२-२५९५५५६

अनुक्रमणिका

क्र.	लेख	लेखक	पृष्ट क्र.
१.	वैदिक विनय	अभयदेव विद्यालंकार	२
२.	सम्पादकीय		४
३.	मर्यादा पुरूषोत्तम.....	डॉ. सत्यपाल सिंह	५
४.	आर्य समाज में प्रचलित.....	डॉ. धर्मवीर	११
५.	संसार के श्रेष्ट पुरूषों...	स्वा. श्रद्धानन्द	१४
६.	यह आपदा	सय्यद मुबीन जेहरा	१५
७.	धर्मः एक वैज्ञानिक ...	डॉ.रघुवीर वेदालंकार	१६
८.	काव्य सलिला-एक ज्वलंत प्रश्न....	ओमप्रकाश बजाज	१९
९.	सिर दर्द...	डॉ. नागेन्द्र कुमार नीरज	२०
१०.	सभा क्षेत्र की सूचनाएं व समाचार		२२
११.	आर्य पर्वों की सूची		२३

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय

आगामी माह में विजवा दशमी पर्व मनाया जाएगा । यह पर्व आश्विन माह की सुदी दशमी को मनाया जाता है । आषाढ़, सावन व भादों महीनों में लगातार वर्षा का वातावरण अब बदलता नजर आता है । वर्षा से उबे लोग खुले मौसम की प्रतीक्षा करते हैं । चौमासा में स्वाध्याय आदि के लिए उपयुक्त मौसम रहता है । जीवन बहु उद्देश्यीय हुआ करता है । आध्यामिकता से इतर जीवन भी आवश्यक है । कृषि, उद्योग, स्वास्थ्य वर्धन की ओर भी लक्ष करना ही होता है । भारत कृषि प्रधान देश है उन्हारी की फसलें अब पकने की ओर रहती हैं उनकी ओर ध्यान देने के साथ स्यारी की फसलों की ओर कृषकों का लक्ष जाता है इसी प्रकार वर्षा समाप्ति के साथ ही अस्त्र शस्त्रों व यौद्धिक उपकरणों की साथ साफ-सफाई की ओर भी लक्ष दिया जाता है । यह पर्व शौर्य के प्रति जागरूक होने का सन्देश देता है । इसी प्रकार यह पर्व आपसी मनोमालिन्य को दूर कर पुनः सौजन्यता के वातावरण में प्रवेश करने के लिए आह्वान करता है । सामाजिक सौहार्द की आवश्यकता तो हमेशा रहती है ।

आर्य समाज में अगली पीढ़ी के निर्माण की आवश्यकता सभी महसूस करते हैं । विजया दशमी का अवसर है जब कि हम आर्य वीर दल या इसी प्रकार की संस्थाओं की ओर ध्यान देने की ओर नए सिरे से कार्य करें ।

विजया दशमी के साथ श्री रामचन्द्र जी की लंकेश रावण पर विजय की घटना को भी जोड़ दिया गया है । यद्यपि इसका कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है । इतिहास से ज्ञात होता है कि श्री रामचन्द्र जी ने पंपापुर से लंका की ओर प्रस्थान कर अपनी विजय यात्रा का शुभारंभ किया था । अस्तु । भारत वर्ष में नौटंकियां, नाटक, प्रहसन, आदि लोक प्रिय सदा से रहे हैं । इसी क्रम में रामलीलाओं का आयोजन सब तरफ होता हुआ हम देखते हैं । नाटकों का समारोप तो करना ही होता है अतः परम्परानुसार श्री रामचन्द्र जी की विजय समारोप के साथ में दर्शाई जाती है । लगातार इन दृश्यों को देख कर जन सामान्य में धारणा बनती गई और यह धारणा पक्की हो गई कि श्री रामचन्द्र जी की लंका विजय विजयदशमी पर हुई । आज तो दशहरे पर बड़े-बड़े आयोजन होते हैं । रावण के विशालकाय पुतले बनाए जाते हैं रावण के पुतले का तीर से बेधा जाता है । और न जाने क्या क्या होता है आतिशबाजी की जाती है । पर्यावरण की दृष्टि से उनका औचित्य प्रश्न चिन्ह उपस्थित करता है ।

इसी प्रकार देवी की विशालकाय मूर्तियां स्थापित की जाती हैं । देवी की पूजा में बली चढ़ाई जाती थी समाज सुधारकों प्रयासों से ये बली अब सार्वजनिक रूप से नहीं होती पर व्यक्तिगत रूप से की जाती हैं । इसी प्रकार मूर्तियों को नदी तालाबों में सिराया जाता है । इन मूर्तियों के निर्माण में वातावरण को हानि पहुचाने वाली सामग्री का उपयोग किया जाता है। अब साधु सन्तों ने ऐसी सामग्री के उपयोग न करने तथा छोटी मूर्तियों के निर्माण की अपील करना प्रारम्भ कर दिया है । अपेक्षा है सुधारों के इन क्रमों से और आगे बढ़ना होगा । आशा है सच्ची भक्ति क्या है इसे जानने की उत्कण्ठा बढ़ाने के लिए आर्य समाज कार्य करेगा ।

इसी अवसर पर हम एक अन्य चर्चा करना आवश्यक समझते हैं । आश्विन माह के प्रथम पक्ष में पूरे १५ दिनों तक पितर पक्ष मनाया जाता है तथा उसका समारोप होता है अमावस्या को । इस दौरान पितरों का तर्पण चलता है । यह पूरा आयोजन भ्रान्त धारणाओं पर आधारित है । पुराणों एवं स्मृतियों को आधार बना कर यह कर्म काण्ड किया जाता है, पितरों की तृप्ति कैसे होती है आदि से सम्बधि ात शास्त्रीय विवेचन से हट कर चर्चा करें । यह माना जाकर कि मानो पितर प्रतीक्षा करते रहते हैं कि हमारे उत्तराधिकारी इस पक्ष में हमारी तृप्ति करेगें । और वे यदि ऐसा नहीं करेगें तो वे परेशानियों के कारण बनेगें । अतः उत्तराधिकारियों को यह कार्य अवश्य ही करना है । उनके मस्तिष्क में ये विचार कूट कूट कर भर दिए जाते हैं जिससे वे ऐसा करने के लिए विवश होते हैं । धान्य, जल, मछली, मांस आदि के द्वारा उनकी तृप्ति करें । साहित्य में तो यह विधान किया गया है वे ब्राह्मण को शैया पर बैठाकर उसे मधुपर्क और अर्घ देकर मनुष्य कि माथे (कपाल) की हड्डी को बारीक पीस कर दही और दूध स्वयं पितृ भक्ति से समाथित होकर द्विज दम्पत्ति को खिलाएं । इत्यादि । मृत्यु उपरान्त हमारी प्राचीन वैदिक विचार धारा के अनुसार मनुष्य का पुनर्जन्मों यथाशक्ति हो जाता है । अतः स्वाभाविक रूप से प्रश्न उपस्थित होता है कि श्राद्ध में जो खिलाया पिलाया जाता है वह किसे खिलाया पिलाया जा रहा है ? अन्न आदि से किसकी तृपि होती है ? पशु, पक्षियों,

शेष भाग अगले पृष्ठ पर .....

www.thearyasamaj.org

मर्यादा पुरूषोत्तम राम की ऐतिहासिकता

डॉ. सत्यपाल सिंह (पोलिस कमिश्नर मुंबई)

भारत के ही नहीं बल्कि विश्व इतिहास में हजारों वर्षों से जिन महापुरूषों के चरित्र ने जनमानस को हृदय की गहराइयों तक लगाकर प्रभावित किया है उनमें भगवान् राम का नाम मुख्य है। उनका युग चक्रवर्ती सम्राटों व सम्राज्यों का था। यह वह जमाना था जिस के बारें में बाइबल (जेनीसिस 11.1) में लिखा है कि सारे संसार में एक ही भाषा व वाणी थी। उस समय हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, यहूदी आदि धर्म / मत सम्प्रदाय नहीं थे और न ही आज के समान जाति-आधारित सामाजिक दीवारें। तब मनुष्य समाज के दो ही भाग थे आर्य व अनार्य (असुर, राक्षस)। जो चरित्रवान व विद्वान न था वहीं अनार्य (राक्षस) था। तब सारी मानव जाति की एक ही संस्कृति थी।

साहित्य शोध :-

भगवान राम के बारे में अधिकाधिक रूप से जानने का मूल स्त्रोत महर्षि **वाल्मीकि** द्वारा रचित **रामायण** है। इस गौरव ग्रन्थ के कारण वाल्मीकि दुनियाँ के आदि कवि माने जाते हैं। श्रीराम कथा केवल वाल्मीकि रामायण तक सीमित न रही बल्कि मुनि व्यास रचित **महाभारत** में भी चार स्थलों - रामोपाख्यान, आरण्यकपर्व, द्रोण पर्व तथा शांतिपर्व - पर वर्णित है। **बौद्ध** परम्परा में श्रीराम सम्बन्धित **दशरथ जातक, अनामक जातक** तथा **दशरथ कथानक** नामक तीन जातक कथाएँ उपलब्ध हैं। रामायण से थोड़ा भिन्न होते हुए भी वे इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ हैं। जैन साहित्य में राम कथा संबंधी कई ग्रन्थ लिखे गये जिन में मुख्य है - विमलसूरिकृत **'पदमचरित्र'** (प्राकृत), रविषेणाचार्यकृत **'पदमपुराण'** (संस्कृत), स्वयम्भू कृत **'पदमचरित्र'** (अपभ्रंश), **'रामचन्द्र चरित्र पुराण'** तथा गुणभद्रकृत **'उत्तर पुराण'** (संस्कृत)। जैन परम्परा के अनुसार राम का मूल नाम 'पदम' था।

अन्य अनेक भारतीय भाषाओं में भी राम कथा लिखी गयी। हिन्दी में कम से कम 11, मराठी में 8, बंगला में 25, तमिल में 12, तेलुगु में 5 तथा उडिया में 6 रामायणें मिलती हैं। हिन्दी में लिखित गोस्वामी **तुलसीदास** कृत **'रामचरित्र मानस'** ने उत्तर भारत में विशेष स्थान पाया है। इस के अतिरिक्त भी संस्कृत, गुजराती, मलयालम, कन्नड़, असमिया, उर्दू, अरबी, फारसी आदि भाषाओं में राम कथा लिखी गयी। महाकवि कालिदास, भास, भट्टि, प्रवरसेन, क्षेमेन्द्र, भवभूति, राजशेखर, कुमारदास, विश्वनाथ, सोमदेव, गुणादत्त, नारद, लोमश, मैथिली शरण गुप्त, केशवदास, गुरूगोविन्द सिंह, समर्थ गुरू रामदास, संत तुकडो जी महाराज आदि चार सौ से भी अधिक कवियों ने, संतों ने अलग-अलग भाषाओं में राम तथा रामायण के दूसरे पात्रों के बारे में काव्यों/कविताओं की रचना की है।

विदेशों में **तिब्बती रामायण**, पूर्वी **तुर्किस्तान** की **खोतानी**

शेष भाग अगले पृष्ठ पर .....

पूर्व पृष्ठ का शेष अंश ...

ब्राह्मणों आदि के माध्यम के खिलाया गया कहा जाता है। पार्सल भिजवाया गया है पर किसे भिजवाया गया यह समझ से परे है। अस्तु।

इस वैज्ञानिक युग में विवेक व तर्क से इन क्रिया कलापों की पुष्टि सम्भव नहीं है। विवेकशील लोगों ने इससे अपने आप के अलग किया हुआ है। पर परिपाटियां चल रही हैं और सामान्य व्यक्ति उनका शिकार होता जा रहा है।

आइए हम जहां अपने को इस भ्रान्त विचार धारा से अलग रखें। श्राद्ध और तर्पण जीवित माता, पिता, गुरूजन आदि का ही हो सकता है। वैसा ही करें। उनकी सेवा सुश्रुषा करें अन्यथा

"जियत पिता से दगंम, दंगा,
मरे पिता को पहुचाएं गंगा
जीवित पिता को दीनी न रोटी
मरे पिता को खीर और बोटी"।

के अनुसार दोषियों की सूची में शामिल न हो जाएं। अपने पितरों आदि के यश की वृद्धि करके हम उनके ऋण से उऋण हो सकते हैं।

जयसिंह गायकवाड़

www.thearyasamaj.org

रामायण, इंण्डोनेशिया की ककबिन रामायण, **जावा सेरतराम,** सैरीराम, रामकेलिंग, **पातानी रामकथा, इण्डोचायना की रामकेर्ति** (रामकीर्ति), **खमैर रामायण, बर्मा** (म्यांनमार) की **यूतों की रामायागन, थाईलैण्ड की रामकियेन** आदि रामचरित की बखूबी बखान करती हैं । इसके अलावा विद्वानों का ऐसा भी मानना है कि **ग्रीस** के कवि होमर का प्राचीन काव्य **'इलियड, रोम** के कवि **नोनस** की कृति **'डायोनीशिया'** तथा रामायण की कथा में अद्‌भुत समानता है ।

विश्व साहित्य में इतने विशाल एवं विस्तृत रूप से विभिन्न देशों में विभिन्न कवियों / लेखकों द्वारा राम के अलावा किसी और चरित्र का इतनी श्रद्धा से वर्णन न किया गया ।

मन्दिर व मृण्मूर्तियाँ :-

देश विदेशों में भगवान राम, लक्षण, सीता, हनुमान आदि के सैकड़ों नहीं - हजारों मन्दिरों का निर्माण किया गया । **कम्बोडिया** के विश्व प्रसिद्ध, 11वीं शताब्दी में निर्मित, **अंकोरवाट** मन्दिर की दीवारों पर रामायण व महाभारत के दृश्य अंकित हैं । इसी तरह 9वीं सदी में निर्मित **जावा** के **परमबनन (परमब्रह्म)** नामक विशाल शिवमन्दिर की भित्तिकाओं पर रामायण की चित्रावली अंकित है ।

रामायण से संबंधित सैकड़ों मृण्मूर्तियाँ (टैराकोटा) हरियाणा प्रदेश के सिरसा, हाठ, नचारखेडा (हिसार), जींद, सन्थाय (यमुनानगर), उत्तर प्रदेश के कौशाम्बी (इलाहाबाद), अहिच्छत्र (बरेली), तथा कटिंघर (एटा), तथा राजस्थान के भादरा (श्रीगंगानर) आदि जगहों से प्राप्त हुई हैं । इन मृण्मूर्तियों पर वनवास काल की प्रमुख घटनाओं को बहुत सुन्दर रूप से दिखाया गया है । इन में मुख्य है राम, सीता, लक्ष्मण का पंचवटी गमन, मारीच, मृग, त्रिशिरा राक्षस द्वारा खर-दूषण से विचार - विमर्श और राम द्वारा 14 राक्षसों के वध का वर्णन रावण द्वारा सीता हरण, सुग्रीव आदि द्वारा राम का स्वागत, सुग्रीव-बाली युद्ध, श्री राम द्वारा बाली वध, हनुमान द्वारा अशोक वाटिका को नष्ट किया जाना, त्रिशिरा राक्षस का वध, रावण पुत्र इंद्रजित का युद्ध में जाना आदि -2 दृश्य विद्यामन हैं । इन मृण्मूर्तियों पर गुप्ताकाल पूर्व की लिपि में वाल्मीकीय रामायण के श्लोक भी लिखे गये हैं । ये मृण्मूर्तियाँ हरियाणा के गुरूकुल झज्जर के पुरातत्व संग्रहालय में देखी जा सकती हैं । इसके अलावा सैकड़ों मृण्मूर्तियाँ भारत के विभिन्न संग्रहालयों तथा लदन म्यूजियम में संग्रहित हैं ।

कुषाण सम्राट कनिष्क ने अपनी मुद्रा पर वायु देवता हनुमान को स्थान दिया था । बादशाह अकबर ने अपनी एक स्वर्ण मुद्रा पर राम-सीता को चित्रित किया था । दिल्ली के सफदरजंग मदरसे में रामायण के चित्र अंकित हैं । मध्यभारत के धार तथा रतलाम राज्य की मुद्राओं पर हनुमान अंकित है । संतो द्वारा प्रचलित पीतल की मुद्राओं पर राम आदि चारों भाई, सीता तथा हनुमान को दिखाया गया ।

इतने विस्तृत साहित्य तथा पुरातात्विक प्रमाणों के बावजूद भी भगवान राम को ऐतिहासिक पुरूष न माना जाये तो इससे बड़ी विडम्बना और क्या हो सकती है ?

श्री राम का कालः

प्राचीन भारतीय कालगणना तथा पुराणीय परम्परा के अनुसार श्रीराम 24 वे त्रेता. युग में पैदा हुए । बाल्मीकि रामायण तथा अन्य प्राचीन ग्रंथों में राम, रावण आदि के विषय में चार मुख्य संदर्भ मिलते हैं ।

1. त्रेता युगे चतुर्विंशे रावणः तपसः क्षयात । राम दाशरथिं प्राप्य सगणः क्षयमीयीवन् ।। (वायु पुराण 70.88)

2. संधौ तु समनुप्राप्ते त्रैतायां द्वापरस्य च । रामो दाशरथिर्भूत्वा भविव्यामि जगत्पति ।। महाभारत (348.19)

3. चतुर्विंशे युगे चापि विश्वामित्र पुरः सरः । लोके राम इति ख्यातः तेजसा भास्कारोपम ।। (हरिवंश 22.104)

4. चतुर्विंशे युगे वत्स! त्रेतायां रघुवंशजः । रामो नाम भविष्यामि चतुर्व्यूहः सनातनः ।। (ब्रह्माण्ड पुराण 2.2.36.30)

उपरोक्त संदर्भो व प्रमाणों के आधार पर यह ही सत्य मालूम होता है कि श्रीराम, रावण, विश्वामित्र आदि युग पुरूष 24 वें त्रेता युग में थे । महाभारत के अनुसार श्रीराम त्रेता एवं द्वापर युगों के संधिकाल में हुए थे । यहां 24 वें किंवा दूसरे त्रेता का वर्णन नहीं है । ऊपर लिखे प्रमाणों के आधार पर हम अगर 24 वें त्रेता की समाप्ति पर राम का काल मानें तो युगों की वर्ष-गणना के हिसाब से 4,32,000 वर्षो का एक कलियुग, उसके दुगुने अर्थात् 8,64,000 वर्षो का एक द्वापर युग, कलियुग के तीन गुने अर्थात् 12,96,000 एक त्रेता युग तथा कलियुग - काल के चार गुने अर्थात् 17,28,000 वर्षो का एक सत (कृत) युग अर्थात् 43,20,000 (43 लाख, 20 हजार वर्षो की एक चतुर्युगी) 24 वीं चतुर्युगी का द्वापर युग का कलियुग (12,69,000) वर्ष 25 वीं, 26 वीं, 27 वीं तीन पूरी चतुर्युगी (12,96,000) वर्ष 28 वीं, चतुर्युगी का सतयुग, त्रेता व द्वापर युग (38,88,000) वर्ष 28 वीं चतुर्युगी का अब चल रह कलियुग के बीते वर्ष 5108 इन सबका योग होता है 1,81,49,108 (1 करोड़, 81 लाख, 49 हजार, 108 वर्ष) और अगर श्रीराम का काल हम अभी चल रहे 28 वीं चतुर्युगी में गये त्रेता में मानें तो बीते द्वापर के (8,64,000) वर्ष + कलियुग के बीते (5108) वर्ष - जोड़कर

www.thearyasamaj.org

श्रीराम का समय आज से 8,69,108 वर्ष पूर्व का ठहरता है ।

इतने लम्बे काल के बाद किसी भी भवन, मूर्ति, मुद्रा, हथियार आदि का अस्तित्व रह ही नहीं सकता । प्रत्येक मनुष्य के अस्तित्व के लिये प्रमाण दिये भी नहीं जा सकते । 4-5 पीढ़ियों पूर्व अगर कोई व्यक्ति बिना संतान के मर गया तो उसको सिद्ध करने के लिये हमारे पास शायद कोई प्राकृतिक वस्तु न मिले । अगर कोई घर है भी तो यह उसी ने बनाया था जब तक इसका दस्तावेज नहीं मिलता अथवा उसके बारे में कई जनश्रुति नहीं मिलती तो कैसे सिद्ध किया जा सकता है? आज के समय में देश में अथवा विदेशों में राज्य करने वाले प्रधानमंत्रियों तथा राष्ट्रपतियों के बारे में 1000 वर्षो के बाद में कोई प्रमाण मांगे तो उस समय उनके पास सिर्फ पुस्तकी विवरण तथा जनश्रुति ही उनके इतिहास को बता सकती है ।

पिछले कुछ वर्षो में कम्प्यूटर का ज्ञान रखने वाले कुछ अति उत्साही लोगों ने वाल्मीकि रामायण (बालकाण्ड 1.188-9) में वर्णित श्री राम के जन्म समय (चैत्र मास, शुक्ल पक्षी, नवमी तिथि, पुनर्वसु नक्षत्र, कर्क लग्न आदि) की प्लेनेटेरियम गोल्ड साफ्टवेयर के माध्यम से आधुनिक गणना की है । इन लोगों ने ग्रहों, नक्षत्रों आदि की स्थिति का अध्ययन करते हुए यह परिणाम निकाला कि श्रीराम का जन्म 10 जनवरी, 5114 ई. पूर्व (अर्थात् आज से 7121 वर्ष पूर्व) हुआ था । ये लोग जहां साधुवाद के पात्र हैं वहां हमें यह भी याद रखना चाहिये कि गणित ज्योतिष की अनभिज्ञता व साहित्यिक प्रमाण के अभाव के कारण उनका यह परिणाम ठीक नहीं । गणित ज्योतिष के हिसाब से लगभग 26,000 वर्षो में राशियाँ अपना एक चक्र पूरा लेती हैं । अर्थात् एक राशि चक्र का अपने पूर्ववत् स्थान पर आने के लिये लगभग 26,000 वर्ष लगते हैं ।

इसीलिये, राम सिर्फ 7121 वर्ष पूर्व ही जन्मे, उससे 26000 वर्ष पूर्व नहीं यह किस आधार पर कहा जा सकता है? पहले दिये गये वायुपुराण व महाभारत के प्रमाणों के आधार पर यदि हम श्रीराम का जन्म 28 वें त्रेता (वर्तमान चतुर्युगी) में मानें तो तब से राशि चक्र आकाश में 33 चक्कर लगा चुका है व 34 वाँ चालू है और यदि हम 24 वें त्रेता का आधार लेते हैं तो तब से लेकर आज तक 698 राशिचक्र पूरे हो चुके हैं और 699 वाँ चक्र अभी चल रहा है ।

नासा (अमेरिका) एजेंसी के जैमिनी-11 आकाश यान (स्पेश क्राफ्ट) द्वारा वर्ष 2002 में एडम ब्रिज (रामसेतु) के लिये गये चित्रों के वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर कहा गया था कि भारत तथा श्रीलंका को जोड़ने वाले पुल के ये अवशेष मनुष्यकृत हैं तथा लगभग 17.5 लाख वर्ष पुराने हैं । वाल्मीकि रामायण के आधार पर तो यह सच है कि श्री राम ने लंका तक अपनी सेना को ले जाने के लिये एक पुल का निर्माण कराया था । अगर इस पुल का निर्माण काल लगभग 17.5 लाख वर्ष पूर्व का है तो हमें मानना होगा कि श्रीराम 28 वें त्रेता के बीच में पैदा हुए, न कि त्रेता तथा द्वापर युगों की सन्धि वेला में और न ही 24 वें त्रेता में । और ऐसा मानने से भी राशि चक्र की गणना पर कोई फर्क नहीं पड़ता । तब राशियों के चक्र को 66 चक्कर लगाने पड़े ।

पुनः यह लिखना भी गलत न होगा कि जुलाई 2007 में नासा द्वारा श्री एन के रघुपति (सेतु समुद्रम शिप कनाल प्रोजेक्ट के अध्यक्ष) को भेजे गये अपने ई-मेल संदेश में कहा था कि सेतु के अवशेष किसी मानव प्रक्रिया से संबंधित हैं ऐसा नहीं कहा जा सकता । नासा ने अपने पुराने निर्णय / कथन को क्यों बदला इसके बारे में कुछ भी कहना अन्यथा होगा । यदि एडम ब्रिज / राम सेतु एक प्राकृतिक भूगर्भीय संरचना (नेचुरल जियोलोजीकल फारमेशन) भी है तो भी इसका बखूबी प्रयोग तो श्रीराम द्वारा एक अस्थायी पुल बनाने में किया ही जा सकता था । उथले समुद्र की तलहटी पर बनी यह संरचना अपने कलेवर / आकार में बढ़ रही है या घट रही है, इसका तो वैज्ञानिक परीक्षण अभी तक हुआ नहीं है । इतने युगों व शताब्दियों के थपेड़े खाकर किसी भी मानव रचित संरचना के अवशेष मिलना तो असंभव ही है ।

विदेशी दुष्प्रचार व दुराग्रह

कुछ क्या अधिकतर विदेशी विद्वानों की मान्यता है कि भारतीय लोग मौखिक रूप से पढ़ते पढ़ाते थे । वे लिखना जानते न थे । इतिहास लिखने में उसकी रूचि नहीं थी । प्राचीन भारतीयों में कालगणना का कोई विचार नहीं था । आर्य लोग बाहर से आये और यहां के मूल निवासियों (द्रविड) लोगों को जीत कर यहां बस गये । सिंधु घाटी की सभ्यता (हडप्पा आदि) को आर्यों ने बाहर से आकर नष्ट किया । मानव जाति का इतिहास लगभग 5000 वर्ष पुराना है । आदमी का पूर्वज बन्दर व चिपांजी है आदि-आदि

संक्षेप में कहा जा सकता है कि ऊपर की सभी बातें अवैज्ञानिक, असत्य व कोरा दुष्प्रचार हैं । यह बात आज जग जाहिर हो चुकी है कि विदेशी विद्वान मैक्समूलर, विलसन, मेकडोनल, रुडोल्फ, वेबर, ग्रिफिथ, विन्टरनिट्ज, मोनियर विलियम्स आदि सभी का मुख्य उद्देश्य एक ही था जो मैक्समूलर के शब्दों में, जो उसने अपनी पत्नी को 1866 में लिख पत्र में स्पष्ट किया था, कि मेरा यह वेदों का संस्करण तथा मेरा वेदभाष्य उत्तरकाल में भारत के भाग्य पर भारी प्रभाव डालेगा । यह उनके धर्म ग्रन्थ हैं और मैं निश्चयपूर्वक कह सकता है कि मेरा कार्य

www.thearyasamaj.org

उनकी (भारतीयों) दीर्घकालीन आस्तिक भावना को निर्मूल कर देगा ।'' अध्यापक गोल्टुस्टर ने तो इस रहस्य का उद्घाटन किया था कि ''राय, बेवर, विह्टलिंग, फुहान आदि विद्वान् लेखक किसी रहस्यपूर्ण कारण से इस बात के लिये दृढ़ संकल्प हैं कि जैसे भी संभव हो, भारत का गौरव नष्ट किया जाये ।''

गतवर्ष (जुलाई 2007) तीन वरिष्ठ लेखकों – श्री कृष्ण रामास्वामी, एन्टोनिओ द निकोल्स एवं अदिति बनर्जी द्वारा सम्पादित एक अंग्रेजी पुस्तक ''इनवेडिंग दि सैकरेड–एन एनलैसिस आफ हिंदुइज्म स्टडीज इन अमेरिका'' मुंबई में विमोचित की गयी । यह पुस्तक कई वर्षो के शोध का परिणाम बतायी गयी है । इसमें कहा गया है, ''भारत के मुकाबले अमेरिका के बुद्धिजीवियों में धर्म संबंधी अध्ययन एक महत्वपूर्ण विधा है तथा सैकड़ो शोधकर्ता हिन्दू तथा दूसरे भारतीय धर्मों पर काम करते हैं । उनमें से अधिकतर स्कालर भारतीय धर्म व संस्कृति के बारे में जान बूझकर झूठी व्याख्या व गलत अनुवाद करके भ्रम व दुराग्रह फैलाने में लगातार व्यस्त है । उनकी सोच पुरानी सामंतवादी व मिशनरी दृष्टिकोण से प्रभावित है । उनकी तथाकथित शोध कुछ शक्तिशाली समूह (कारटल) द्वारा चालित पक्षपातपूर्ण, भ्रामक तथा अविश्वनीय है ।''

हमें यह जानकर एक आश्चर्य ही होगा कि मैकाले को एक भी भारतीय भाषा का ज्ञान न था परन्तु उसने सम्पूर्ण भारतीय बुद्धिमता का उपहास किया; जेम्स मिल ने कभी भी भारत की यात्रा न की पर उसने भारत का इतिहास लिखा । मैक्समूलर, विन्टरनिट्ज, ग्रिफिथ आदि भारतीय धर्म व संस्कृति पर लिखने वाले किसी भी विदेशी विद्वान को वैदिक व्याकरण, निरूक्त, छन्द, ज्योतिष का ज्ञान न था पर उन सब ने वेदों व वैदिक ग्रन्थों का अनुवाद किया और स्वयं सिद्ध प्रतिष्ठित व्याख्याकारों की हैसियत भी ले ली ।

वैदिक परम्परा की कालगणना के अनुसार सृष्टि का समय 4 अरब 32 करोड़ वर्ष है । और सकल्प मंत्र **'' ओं तत्सत अद्य ब्रह्मणो द्वितीय प्रहरार्द्धे श्वेतवाराहकल्थे सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमे चरणे ..... गताब्दे''** की गणना से भारतीयों ने सृष्टि रचना (मनुष्योत्पत्ति काल) से लेकर आज तक काल की, तथा इतिहास की धारा को अक्षुण्ण रखा है । मनुष्य उत्पत्ति काल को अभी तक 1 अरब 97 करोड़, 29 लाख, 49 हजार, 108 वर्ष हो चुके हैं । कुछ वैदिक विद्वानों का यह भी मानना है कि मनुष्यों की उत्पत्ति सातवें मन्वन्तर वैवस्वत मनु में हुई । उसके पूर्व के मन्वन्तरों में सूर्य, ग्रह, नक्षर, पृथ्वी, समुद्र, वनस्पति, पशु आदि पैदा हुए । अगर हम वैवस्वत मनु से ही मनुष्य उत्पत्ति का काल लें तो भी आज तक 12 करोड़, 5 लाख, 33 हजार, 108 वर्ष हो गये । इससे इतना तो तय ही है कि मनुष्यों का इतिहास बहुत लम्बा है ।

भारतीय शुरू से ही लिखता जानते थे । ऋग्वेद (10.71.4) में वाणी के दो रूप बताये गये हैं, एक दृश्य और दूसरा श्रव्य । दृश्य का अर्थ उसका लिखा हुआ रूप है, और श्रव्य रूप ध्वनि है– मौखिक है । भारत में लिपि का प्रचलन अति प्राचीन काल से रहा है । प्रकृति प्रदत्त भाजनपत्र व ताड़पत्र धरती पर आदमी के आने से पहले ही प्रचुर मात्रा में मौजूद थे । जैसे कागज स्थायी नहीं, ऐसे ही भोजपत्र व ताड़पत्र भी स्थायी न थे । मौसमी कारणों से खराब होने पर पुस्तकों की प्रतिलिपि तैयार की जाती थीं । अन्यथा भारत में अत्यन्त प्राचीन ग्रन्थ आज कैसे मिलते ? वेद–शास्त्र–ज्योतिष ग्रन्थों और बड़े बड़े काव्यों को कैसे याद रखा जा सकता था । हाँ कुछ लोग अवश्य थे जो एक या अधिक वेदों को कण्ठस्थ करने में गर्व अनुभव करते थे । अगर यह कहा जाये कि उस समय सब की बुद्धि इतनी प्रखर तथा स्मरण शक्ति आज के मुकाबले में कई गुणा अधिक थी – तब तो यह बात भी डार्विन के विकासवाद के विरूद्ध जाती है । सच्चाई यही है कि भारतीय लिखना जानते थे और खूब लिखते थे । विश्व के किसी भी देश में इतना विशाल साहित्य भंडार नहीं–इससे बड़ा 'लिखना' जानने का सबूत और क्या हो सकता है?

डार्विन के विकासवाद सिद्धांत की अव्यावहारिकता व अवैज्ञानिता को अब तो कुछ विदेशी विद्वान भी मानने लगे हैं । अपनी धार्मिक आस्था के कारण जहां पहले कुछ पश्चिमी वैज्ञानिक पृथ्वी की आयु लगभग 6000 वर्ष मानते थे आज वे ही लोग पृथ्वी की उम्र 3.96 से 4.3 अरब वर्ष पूर्व की मानने लगे हैं । जब पृथ्वी इतनी पुरानी है तो आदमी इतने लम्बे अन्तराल के बाद क्यों आया – इसका उत्तर कठिन है । अमेरिकन विद्वान श्री ''माइकलक्रमो'' की अभी कुछ समय पूर्व आयी वैज्ञानिक खोजों पर आधारित पुस्तक ''फारबिडन आरकेलोजी'' तथा ''डीवोलूशन आफ मॅन'' ने यह सिद्ध किया है कि डार्विन के सिद्धांत में कोई तथ्य नहीं है । तथा आदमी इस धरती पर लगभग 2 अरब वर्ष पूर्व आया । क्रीमो तथा उनके सहयोगी लेखक रिचार्ड थामसन ने बहुत से पुरातात्विक उदाहरण दिये हैं जो निस्संदेह यह सिद्ध करते हैं कि बहुत बार वैज्ञानिकों को ऐसे तथ्य मिले हैं जो आज इतिहास, भाषा, विज्ञान में फैलाये गये काफी दुराग्रहों की पोल खोलते हैं । वैज्ञानिक पत्र–पत्रिकाओं ने इन खोजों का प्रकाशित भी किया पर डार्विन के विकासवाद तथा 5000 वर्षो की 'मानव जाति की मर्यादा' के लगाये गये चश्मों ने इनको ज्यादा महत्व नहीं दिया । ये तथ्य सिद्ध

www.thearyasamaj.org

करते हैं कि मानव जाति का इतिहास करोड़ों वर्ष पूर्व का है ।

आस्था में अज्ञानता :-

श्रीराम व रामायण को ऐतिहासिक असत्य व कल्पना की उड़ान बताने वाले विदेशी तथा उनके देशी उच्छिष्ट भोजी जितने जिम्मेदार हैं उससे जिम्मेदार कम हमारे अपने ही राम चरित्र पर लिखने वाले कवि तथा दूसरे विद्वान भी (नहीं) हैं । रही सही कसर आज 'राम कथा' करने वाले 'राम लीला' करने-करवाने वाले लोगों ने पूरी कर दी है । सच्ची आस्था को न जानकर ईश्वर के स्वरूप से अनभिज्ञ, हम लोगों ने श्रीराम को ईश्वर व भगवान का अवतार बना दिया । वही पंचतंत्र की कहानियों की तरह हमने वेदों के विद्वान, 'व्याकरणाचार्य बुद्धिमता वरिष्ठम्' हनुमान को बन्दर बना दिया, रामसेतु बनाने वाले इंजीनियर जाम्बवंत को भालू / रीछ मान लिया, प्रसिद्ध सर्जन वैद्य सुषेण, अंगद, बालि आदि को भी बंदर बताया । सीता के अपहरण के बाद आकाश में रावण से लड़ाई करने वाले गृधकूट के भूतपूर्व राजा जटायु के गीद्ध पक्षी बना दिया । अधिक गलत बात तो यह है कि उस जमाने की सबसे सुन्दर व मंत्रवित विदुषी नारी 'तारा' का विवाह एक बानर (बदंर) बाली से कर दिया । माता सीता को जमीन से पैदा होने वाली और अंत में जमीन में समाने वाली बना दिया । और न जाने कहाँ कहाँ तक हमारी कल्पना की असम्भव उड़ान चलती रही । बाल्मीकि ने तो राम को मनुष्य ही माना, एक श्रेष्ठ पुरूष, मर्यादा पुरूषोत्तम जानकर अपने ही समय में (समकालीन होते हुए) राम कथा लिखी थी । राम में मनुष्योचित भावनाएं भी दर्शायी थी । उपन्यास की तरह कल्पित पात्र बनाकर तथा रामायण के मनुष्य पात्रों को पशु-पक्षी बताकर हमने श्रीराम व रामायण की ऐतिहासिकता पर प्रश्न चिन्ह लगा दिये ।

हम तो यहां पर भी नहीं रूके ।

हमने तो श्रीराम को कलंकित करने के लिये कुछ कथाएँ घड़ लीं ।

राम ने कभी भी सीता का परित्याग कर उसे गर्भवती अवस्था में वन में नहीं भेजा और न वाल्मीकि ने ऐसा लिखा । हमने तो तपस्या करते हुए ऋषि शम्बूक का वध भी राम से करा दिया । शम्बूक को शूद्र बताया गया बाल्मीकि ने ऐसा कहीं न लिखा । कोई भी विद्वान तपस्वी ऋषि कभी शूद्र नहीं होता । पर वर्तमान में उपलब्ध रामायण में ऐसा प्रक्षेप करके हमने श्रीराम को, मर्यादा पुरूषोत्तम को स्त्रियों व शूद्रों पर अत्याचार करने वाला बना दिया । बाल्मीकि के राम तो नरों में नरश्रेष्ठ है पर नारायण नहीं, पुरूषों में पुरूषोत्तम हैं पर परमेश्वर नहीं ।

विश्लेषण व कुछ प्रश्न :-

1. क्या हमारे ऋषि मुनि - जिन्होंने जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त सत्य का व्यवहार किया, सत्य बोला और सत्य ही लिखा - उनका कथन आज असत्य व झूठा है तथा हमारे विदेशी तथा उनके पिछलग्गु विद्वान सच्चे हैं? क्या ऋषि वाल्मीकि, मुनि व्यास, कालिदास, भास, भवभूति, अश्वघोष आदि अपने पुराने लेखक, समर्थ गुरूरामदास, गुरूगोविन्द सिंह, स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानंद, हमारे बौद्ध व जैन परम्पराओं के आचार्य झूठे थे, काल्पनिक बातें करते थे, स्वार्थी थे या आज के इतिहास व संस्कृति पर कलम चलाने वाले कालिजों व विश्वविद्यालयों के लोग अज्ञानी, झूठे तथा किसी षड्यन्त्र में शामिल हैं ।

2. आदमी ने पहले सच्ची कहानियां, सच्चा इतिहास लिखना शुरू किया न कि कल्पना आधारित उपन्यास आदि, ये सब बाद में आये । भारत में तो काल्पनिक चरित्रों पर लिखने की परम्परा ही न थीं ।

3. हमारे तो इतिहास, पुराण, स्मृतियां, औपनिषदिक कहानियां कपोल कल्पित हैं तथा यूरोप अमेरिका पाश्चात्य देशों में चलने वाली किंवदन्तियां, कहानियां सच्ची इतिहास हैं ।

4. क्या दुनियां में आज तक किसी भी जाति व समाज ने किसी काल्पनिक व्यक्ति का 'जन्म दिवस' मनाया या सैकड़ो-हजारों सालों से मानते आये हैं? अगर यह सत्य नहीं तो हजारों वर्षो से देश विदेशों में मनाये जाने वाला राम जन्मोत्सव-रामनवमीं झूठ पर कैसे आधारित हो सकता है?

5. क्या आज तक किसी काल्पनिक, मन गढ़न्त व्यक्ति वा चरित्र पर 10-20 लेखकों ने भी लिखा है? यदि नहीं तो सैकड़ों नहीं हजारों ऋषि, मुनि, कवि, लेखकों द्वारा दुनियां की विभिन्न भाषाओं में, दुनियां के विभिन्न देशों में हजारों वर्षो से लगातार लिखा गया 'राम चरित्र' व रामायण कपोल-कल्पित कैसे हो सकता है?

6. दुर्जनतोष न्याय से अगर हम यह मान लें कि राम तथा रामायण कवि की कल्पना है तो यह मानने में तो कोई दोष नहीं है कि स्वयं कवि / लेखक का तो अस्तित्व व्यक्ति नहीं था । वाल्मीकि के जीवन के बारे में 'अध्यात्म रामायण' में विस्तार से लिखा गया है । स्वयं वाल्मीकि जब राम से मिलने पहली बार जाते हैं तो कहते हैं -

प्रचेतसोऽहं दशमः पुत्रो राघवनन्दनः । न स्मराम्यनृतं वाक्यमिमौ तु तव पुत्रकौ ।। (वा.रा.7.96.19)

अर्थात् हे राघवनन्दन राम ! मैं प्रचेता का दशवां पुत्र हूँ और मैंने कभी भी एक वाक्य भी झूठ बोला - ऐसा मुझे याद नहीं है - ऐसे सत्य के उपासक महर्षि वाल्मीकि असत्य व काल्पनिक रामायण क्यों लिखेंगे ।

www.thearyasamaj.org

7. क्या कभी किसी काल्पनिक व्यक्ति की पीढ़ी का किसी ने भी नाम वर्णन किया है? अगर नहीं तो कालिदास ने **'रघुवंश'** काव्य में रघुवंश की 19 पीढ़ियों का वर्णन कैसे किया? **'शब्दकल्पद्रुम'** काण्ड 2 मुद्रांकित पत्रिका में लिखा है ''(त्रेतायुग) तत्र राजानः सूर्यवंशीय बाहुक – सर्ग – अशुंमत – असमजस – दिलीप – भगीरथ – अज – दशस्थ – रामचन्द्र – कुशी – लवा – एते चक्रवर्तिन : अर्थात् ये ग्यारह राजा चक्रवर्ति सम्राट हुए हैं । फिर भी हम राम को ऐतिहासिक पुरूष नहीं मानते – यह बुद्धि से परे की बात है !''

8. क्या आज तक किसी भी इतिहास लेखक को जिसने अपने जीवन काल में, वर्तमान की भाषा में लिखा हो उसके 'चरित्र नायक' पर किसी ने प्रश्न चिन्ह लगाया है? फिर महर्षि वाल्मीकि जो राम के समकालीन थे व सर्वत्र रामायण में वर्तमान क्रिया की भाषा लिखी, कहीं भी भूतकाल तथा भविष्य काल की क्रियाओं का प्रयोग नहीं किया तो वाल्मीकि तथा उसके चरित्र नायक 'राम' व दूसरे पात्रों के ऐतिहासिक अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह कैसे लगाते है?

9. आज भी अगर किसी व्यक्ति की उम्र का पता लगाना हो तो सबसे पहले उसके स्कूल, कालिज/ जन्मतिथि संबंधी कुंडली आदि पर भरोसा करते हैं । अगर किसी के पास कोई कागजात नहीं, पढ़ा लिखा नहीं तब ही पुलिस वाले उसका ओसीफिकेशन / मेडिकल टेस्ट कराते हैं । पर जब बात किसी पुराने ऐतिहासिक पुरूष की होती है तब हम साहित्यिक प्रमाणों व लेखों को छोड़कर उसके अवशेष भवन मूर्ति, मुद्रा, हड्डी, जमीन में क्यों खोजते हैं?

10. जब विदेश तथा उसके उच्छिष्ट भोजी देशी विद्वानों को ईश्वरीय अपौरूषेय ज्ञान वेद में इतिहास ढूंढना है तो वे कहते हैं कि ऋग्वेद (10/60/4) में राम के पूर्वज, अयोध्या को बसाने वाले '' इक्ष्वाकु कर जिक्र है । अथर्ववेद (10/2/31) में नव द्वारों वाली अयोध्या का वर्णन है । अथर्ववेद (18/3/16) में ही में राम कालीन विश्वामित्र, उनके वशिष्ट, भरद्वाज आदि का नाम आया है । पर जब राम और 'रामायण' की बात आती है तो कहते हैं यह काल्पनिक है? क्या यह हास्यास्पद दोगुली नीति नहीं है? इससे बड़ा पाखण्ड और दुराग्रह क्या हो सकता है?

11. कुछ बाहरी देश के लोग आज भी राम, रावण, लक्ष्मण, सीता के अस्तित्व को मानते हैं । रामायण को मानते हैं तभी तो श्रीलंका की संसद में विभीषण का राजतिलक दिखाया गया है, अशोक वाटिका को सैलानी स्थल बनाया गया है और तो और 'रावण' के वंशजों को पेंशन दी जा रही है । थाईलैण्ड में अयोध्या है वहां का राजा बौद्ध धर्मी होता हुआ भी 'राम' कहलाता है । आज भी 10 वां राम राजा है । इससे भी अधिक महत्वपूर्ण घटना तो इंडोनशिया के इतिहास में घटी । जब नवम्बर 1949 में डच सरकार ने इंडोनेशिया में इरियन (न्यूगिनी) छोड़कर शेष इंडोनेशियन क्षेत्रों को आजादी व संप्रभुता की अनुमति दी तो इंडोनेशिया की जनता ने 'न्यूगिनी' को लेकर जब आंदोलन छेड़ा तो डचों ने ''न्यूगिनी इंडोनेशिया का अभिन्न अंग है'' इसके लिये ऐतिहासिक प्रमाण मांगा तब रामायण परायण **इंडोनेशिया** के विद्वानों ने **वाल्मीकि** रामायण के ये श्लोक **यत्नवन्तो यवद्वीपं सप्तराजोपशोभितम् । सुवर्णरूप्यकद्वीप सुवर्णाकरमण्डितम् ।। यवद्वीपमतिक्रम्य शिशिरो नाम पर्वतः । दिवं स्पृशति श्रृङ्गेण देवदानवसेवितः ।।** (किष्किन्धा 40.30/31) खोज निकाले जिनका अर्थ है कि सीता की खोज में पूर्व दिशा की ओर जाने वाले वानर दल को संबोधित करते हुए सुग्रीव ने कहा था इसके सिवा तुम लोग यत्नशील होकर सात राज्यों से सुशोभित (जावा), सुवर्णद्वाप (सुमात्रा) तथा रूप्यकद्वीप भी जो सुवर्ण की खानों से सुशोभित हैं ढूंढने का प्रयत्न करना । यव द्वीप को लांघकर आगे जाने पर एक शिशिर नामक पर्वत मिलता है जिसके ऊपर देवता और दानव निवास करते हैं । वह पर्वत अपने उच्च शिखर से स्वर्ग लोक का स्पर्श करते हैं । यह शिशिर पर्वत 'न्यू गिनी' में है । यह प्राचीन व अकाट्य प्रमाण देखकर डचों ने न्यूगिनी को भी इंडोनेशिया के हवाले कर दिया । रामायण की सच्चाई पर विश्वास करके इंडोनेशिया में एक नये इतिहास का श्रीगणेश हुआ ।

अंत में, यह कहना भी गलत न होगा कि यदि अभी भी हम राम व रामायण को ऐतिहासिक न मानकर काल्पनिक कहने का साहस करते हैं तो यह एक दुराग्रह ही होगा । फिर किसी को आस्था हो या न हो पर इतिहास तो इतिहास है । कोई अयोध्या में सरयु अथवा गंगा नदी में, श्रीलंका में, श्री राम में, सीता में हनुमान में आस्था रखे या न रखे पर उनकी ऐतिहासिकता को संदिग्ध कैसे कहा जा सकता है? अपने देश के इतिहास लेखकों, विद्वानों व विश्वविद्यालयों को मैं स्वामी विवेकानदं के शब्द याद दिलाना चाहता हूं 'जब लोग अपने भूतकाल पर, अपने पूर्वजों पर शर्म महसूस करने लगते हैं तो समझना चाहिये कि संस्कृति का अंत शुरू हो गया' । श्रीराम का जन्मोत्सव 'राम नवमी' हम लोगों में सच्ची आस्था पैदा करे, जिस में अज्ञान व अंधविश्वास न हो मर्यादा पुरूषोत्तम राम की तरह हम चरित्र के धनी तथा धर्म की मर्यादा मानने वाले बने । ऐसा सत्प्रयास होना चाहिये ।

आर्य जगत से साभार

.....***.....

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज में प्रचलित अनुचित परम्पराएँ

चित्र पर फूल चढ़ाना – लोग श्रद्धावश समधि पर, चित्र पर फूल चढ़ाते हैं। बहुत बार उनका विचार उसको चेतन मानना नहीं होता। उनका केवल इतना अभिप्राय रहता है कि जिस स्थान पर वे आये हैं वहाँ के लोगों को सन्तुष्ट करना उनके प्रिय व्यक्ति के चित्र पर फूल चढ़ाकर अपना आदर भाव अभिव्यक्त करना। इसमें हमारी मनोदशा कब आदर भाव प्रकाशित करने के स्थान पर याचना के भाव में बदल जाती है, इस बात का पता ही नहीं चलता। व्यक्ति कभी भय के कारण भी ऐसा करता है। भयभीत व्यक्ति से भय निवारण का प्रलोभन देकर कुछ भी कराया जा सकता है। इसका सबसे कि मन्त्री पद जाने वाला है तब और सब उपायों के साथ नजर उतारने के लिए बकरे की पूजा भी कर ली जन सामान्य की दृष्टि में भारत सरकार का मन्त्री तो बहुत बुद्धिमान् होता होगा परन्तु नजर उतारने के लिए बकरे की पूजा करने वाले को कौन बुद्धिमान् कहेगा?

जब किसी का देहान्त हो जाता है। तब अर्थी को सजाने के लिए फूलों की माला लगाई जाती है। लगे हाथ आने वाले व्यक्ति माला लेकर मृतक के अन्तिम दर्शन करने लगते हैं तब माला हाथ में है, तो शव पर चढ़ानी ही पड़ेगी। घर के सदस्य भी नारियल माला लेकर परिक्रमा करते हैं, शव पर चढ़ाते हैं। मृतक से प्रार्थना भी करते हैं, प्रेम, मोह या भावुकता में शव से लिपट जाते हैं तब समझदार लोग उन्हें छुड़ाकर शव को उठा लेते हैं, वे जानते हैं यह सब अज्ञान और व्यर्थ है। सभी जानते हैं मृत्यु के पश्चात् शव को जला देना ही ठीक है। सोचने की बात है जब शरीर से जीवात्मा निकल गया वह शरीर निरर्थक हो गया, उससे कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं हो सकता, फिर शरीर के चित्र से क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है? स्वामी रामसुख दास के शब्दों में आत्मा रहित शरीर मुर्दा है तो फोटो मुर्दे का भी मुर्दा है। जब शव को जला दिया, तो चित्र उस अवसर पर आप उसका चित्र लगाकर उसकी स्मृतियों को जगाते हैं, चित्र को सजाते हैं, जिससे चित्र सुन्दर लगे परन्तु चित्र पर फूल चढ़ाकर केवल आप जिसके घर आये उनको सन्तुष्ट करते हैं। यदि चित्र जिसका है उसका प्रियजन फूल चढ़ाएगा, तो केवल आदर व्यक्त नहीं करेगा वह उससे प्रार्थना करेगा, उसके सामने रोएगा, उसको जीवित मानेगा। अपने घर में रखकर प्रतिदिन उस पर भी फूल चढ़ाएगा दिल्ली में एक आर्यसमाज के कार्यक्रम के समय परिवार में भोजन के लिए गये। गृहस्वामी बड़ा ही भगवद् भक्त था उसने अपने पूजा के कमरे में बीस पच्चीस भगवानों के चित्र लगा रखे थे, उन्हीं चित्रों के मध्य उसने अपनी बेटी का चित्र लगाया हुआ था जो एक दुर्घटना में मारी गई थी। बस सभी भगवान मनुष्य के इसी पद्धति से भगवान बन जाते हैं। हमारी बुद्धि कब जड़ को चेतन समझने लगती है इसका हमें पता नहीं चलता।

आजकल हर शोक सभा में मृतक का चित्र लगा होता है। टोकरों गुलाब की पंखुड़ियां उसके पास रखी होती हैं। सैकड़ों-हजारों व्यक्ति पंक्ति बनाकर खड़े हो जाते हैं और बारी-बारी से उस चित्र पर फूल चढ़ाते हैं, वहाँ केवल जिसके घर गये हैं, उसे सन्तुष्ट करना हमारा उद्देश्य होता है। एक बार एक आर्यसमाज के नेता पंक्ति में खड़े थे मैं भी थोड़ा उनसे पीछे था। देखें नेता जी क्या करते हैं? पंक्ति आगे बढ़ी नेताजी ने फूल उठाये चित्र के आगे रखे हाथ जोड़े, सिर झुकाया जैसे ही मुड़े मैंने पूछा फूल चढ़ा दिये, तो सफाई देते हुए कहने लगे ये व्यक्ति तो स्वर्गवासी हो गया। मैंने कहा फिर तो स्वामी दयानन्द को भी आपकी पूजा मिलनी चाहिये। तो वे हा हा कर हंसने लगे।

आजकल कोई भी समारोह हो, विद्यालय हो, तो सरस्वती की प्रतिमा या चित्र होता है अथवा संस्था या उनके विचार से जुड़े व्यक्ति का चित्र रखकर उसके सामने दीपक जलाते हैं, चित्र को माला पहनाते हैं। धीरे-धीरे यह रोग आर्यसमाजों व आर्य संस्थाओं में भी घर करने लगा है। भारत का चित्र बनाकर उसके मध्य महिला का चित्र बना देते हैं और भारत माता की पूजा करने लगते हैं। माला चढ़ाते हैं, आरती उतारने हैं, दीपक जलाते हैं। ऐसे समय में ऐसा न करने व्यक्ति की दशा बड़ी विचित्र होती है। ऐसा लगता है यह व्यक्ति अमुक देवी-देवता का आदर नहीं करता। भारत माता का भक्त नहीं है। परन्तु ऐसे करके मूर्खता को प्रोत्साहित करना होता है। चित्र पर फूल चढ़ाने की परम्परा ने आज एक अनिवार्य पाखण्ड का रूप ल लिया है। ऐसा करते हुए मन में एक भाव रहता है, तो फिर क्या हो गया? हुआ तो कुछ नहीं हम मूर्खतापूर्ण परम्परा के संवाहक बन जाते हैं। और कुछ नहीं हुआ। अतः यह परम्परा त्याज्य है। लोग भावुकतावश ऐसा करते हैं। करवाने वाले जो बात स्वामी दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश की जाट जी-पोप जी की कथा में जो ठग विद्या समझायी है, इसमें भी वही सब करते हैं।

गोमाता की जय– समाज का जब भी सत्सगं होता है कोई कार्यक्रम होता है जय बोलने की परम्परा है। यह परम्परा पौराणिकों और मुसलमानों, सिक्खों से हमने ली है वे भी अपने कार्यक्रम और सत्संग के बाद जय के नारे लगाते हैं आर्यसमाज में भी

www.thearyasamaj.org

लगते हैं । नारे लगाने की दो परिस्थितियां-एक तो सामान्य यज्ञ सत्संग का कार्यक्रम है जिसमें नारे लगाने की लम्बी श्रृंखला निरर्थक होती है । दूसरी परिस्थिति विशेष समारोह मेला, जुलुस, विशेष कार्यक्रम जहाँ बड़ा जन समूह हो या प्रदर्शन हो, वहाँ नारें, गीत ऊँची आवाज में लगाये जाते उनका उद्देश्य उपस्थित लोगों में उत्साह भरना होता है, वहाँ यह लम्बा क्रम उचित कहा जा सकता है । प्रारम्भ में जयकारों की संख्या थोड़ी थी । जो बोले सो अभय वैदिक धर्म की जय, भारत माता की जय । इन नारों में धीरे-धीरे वृद्धि होती रही इसमें प्रमुख कारण रहा पौराणिक भाइयों को सन्तुष्ट करना इसके लिए हमने राम की जय, कृष्ण की जय बोलनी प्रारम्भ की । शान्ति हो, कल्याण हो, सद्भावना हो का नारा हमने पौराणिक भाइयों की नकल से लिया है । हम किस प्रकार दूसरों को सन्तुष्ट करने के लिए अपने कार्यक्रम बनाते हैं उसका एक उदाहरण स्वामी ओमानन्द जी महाराज सार्वदेशिक सभा के प्रधान चुने गये थे उस अवसर पर आर्यसमाज के एक नेता ने मुझे एकान्त में ले जाकर एक चर्चा की । हो सकता है वह चर्चा उन्होंने औरों से भी की हो । क्योंकि इन महानुभाव ने गुरूकुल कांगड़ी में पचास लाख रूपये मिलेंगे और सिक्खों से हमारा प्रेम बढ़ेगा अतः विश्वविद्यालय में गुरू गोवन्द सिंह पीठ स्थापित करने का प्रस्ताव किया था, परन्तु कुछ लोगों के तीव्र विरोध के कारण कार्यान्वित नहीं किया जा सका । यह भी उन्हीं महानुभाव का प्रस्ताव था, वे कहने लगे आजकल आर्यसमाज में और सिक्ख समुदाय में दूरी बढ़ रही है । अतः इसके लिए हमें कुछ प्रयत्न करना चाहिए । जिससे यह दूरी कम हो सके, मैंने कहा आपकी बात बिलकुल ठीक है, हमें क्या करना चाहिए तब उन्होंने अपना विचार दिया हमें अपने आर्यसमाज के सत्संग में गुरू गोविन्द सिंह जी की जय बोलनी चाहिए । मैंने कहा प्रस्ताव तो बहुत अच्छा है तब वे बोले तो फिर मैं बाहर जाकर घोषणा कर दूँ । तब मैंने निवेदन किया मेरी एक बात और सुन लें, फिर घोषणा कर दें । मैंने उनसे निवेदन किया, आप सिक्खों से बात कर लें और स्वर्ण मन्दिर में स्वामी दयानन्द की जय बुलवा दें फिर हमें समाज में गुरू गोविन्द सिंह की जय बोलने में कोई आपत्ति नहीं । पता नहीं क्यों वे चुप हो गये और उन्होंने वह घोषणा नहीं की ।

कुछ लोगों को पता नहीं गोमाता की जय शब्द अच्छा नहीं लगा, अनेक स्थानों पर गो के साथ अन्य पशुओं के नाम भी लेते देखे गये । उनके विचार से अकेले गाय की जय दूसरे पशुओं के साथ अन्याय है । अब उन्हें क्या बतायें गाय को क्यों चुना गया । यह तो वेद, वैदिक साहित्य, ऋषि-मुनियों से पूछना होगा, उन्होंने ऐसी भूल क्यों की । साथ हमारे भाषा-ज्ञान का क्या होगा जिसमें हम संकेत का अभिप्राय न समझ सकें । यही संकट गोमाता की जय में भी है । मुझे भली प्रकार से स्मरण है । बीस-पच्चीस वर्ष पूर्व आर्यसमाजी व्यक्ति ने एक लेख लिखा और इस निर्देश के साथ मुझ भेजा कि इसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा । उनकी ज्येष्ठता, श्रेष्ठता के नाते मेरे द्वारा उसमें परिवर्तन तो सम्भव नहीं था, परन्तु मैंने उस लेख पर कुछ प्रश्न पूछ लिए जो आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं । लेखक का कहना था गाय तो पशु है उसकी जय-पराजय क्या होती है, उसकी तो रक्षा और पालना होनी चाहिए उनका तर्क ठीक था लोगों ने संशोधन कर लिया, गो-माता की जय के स्थान पर गो-माता की रक्षा हो, बोलने लगे । कुछ लोगों को यह भी अधूरा लगा, कुछ स्थानों पर कहा जाते लगा सब गो का पालन व रक्षा करें । गत दिनों जब जबलपुर आर्यसमाज में गया तो इसमें संशोधन हो चुका था वहाँ कहा जा रहा था गाय का दूध पियेंगे तो हमारे बच्चे बलवान बनेंगे और आगे क्या होगा ईश्वर जाने ।

जब लेखक ने कहा गाय पशु है उसकी जय-पराजय क्या होती है, तब मैंने उनसे पूछा भारत माता तो मिट्टी, पत्थर है, इसकी जय-पराजय क्या होती है? स्वामी दयानन्द जी का स्वर्गवास हो गया उनकी जय-पराजय क्या होती है? तब वे कुछ उत्तर तो न दे सके परन्तु उनका अभियान चलता रहा । सामान्य लोग भाषा के विषय में जानकारी नहीं रखते अतः किसी भी बात को अधिक सरल बनाने का प्रयत्न करते हैं । जय का अर्थ तलवार या गोली की हार-जीत न होती इसका अभिप्राय समृद्धि और ह्रास होता है । जय का अर्थ वृद्धि है जिसकी भी हम वृद्धि चाहते हैं, उसकी जय बोलते हैं । आज ईसा की जय हो रही है और मोहम्मद की जय हो रही है, इसका अभिप्राय उनके विचारों का प्रचार-प्रसार बढ़ रहा है, यही उनकी जय है । जय भारत माता की होती है, जय वेद की होती है, जय वैदिक धर्म की होती है, फिर गोमाता की जय क्यों नहीं, रक्षा करो, पालन करो, दूध पियो, छप्पर डालो, क्या होता है? यह हमारी भाषा-ज्ञान का अभाव मात्र है । हमको किसी ने कुछ समझा दिया देखा-देखी प्रारम्भ कर दिया, प्रारम्भ कर दिया, उसके उचित अनुचित पर विचार करने की आवश्यकता समझी ही नहीं । सत्संग में भारत माता की जय केवल आर्यसमाज में बोली जाती है, किसी चर्च में, किसी मस्जिद में, किसी गुरूद्वारे में या किसी धार्मिक कार्यक्रम में नहीं बोली जाती, क्योंकि आर्यसमाज का भारत में उदय हुआ, अधिक विस्तार भी नहीं हुआ, हमारे सत्संग में भारत माता की जय ठीक है, परन्तु विदेश में बोलेंगे गलत होगा । अतः सन्दर्भ के बिना कोई बात की जाती है या कही जाती है, तो वह व्यर्थ है । जय निमित्त और लक्ष्य सूचक होने चाहिए । अतः वैदिक धर्म की और स्वामी दयानन्द की जय में सबकी जय स्वयं होती है । आप भारत

www.thearyasamaj.org

माता की जय, गो-माता की जय बोलते आ रहे हैं, बोलते रहिए, नये पहाड़े गढ़ने की आवश्यकता कहाँ है ।

मातृशक्ति- आर्यसमाज के सभा सत्संगों में एक सम्बोधन सम्भवतः बहुत अच्छा मानकर किया जाता है, परन्तु इसका स्वीकार करने का कारण आजतक समझ में नहीं आया, इस सम्बोधन से मेरा परिचय सबसे पहले छात्र जीवन से हुआ जब मैं व्याख्यान देने के लिए वानप्रस्थ आश्रम के सत्संग में गया । आश्रम के अधिकारी गुरूकुल में वेद पढ़ने वाले छात्रों को अपने आश्रम में निवास की सुविधा देते थे तथा सत्संग, यज्ञ आदि के अवसर पर आप प्रवचन आदि करवा कर उनको अभ्यास का अवसर भी प्रदान करते थे । आश्रम की इस सुविधा से अनेक छात्र लाभान्वित हुए हैं । उन्हीं दिनों जब मैं आश्रम के सत्संग में प्रवचन करके लौट रहा था, एक वानप्रस्थी मुझे अपनी कुटिया पर ले गये और मेरे व्याख्यान की प्रशंसा करते हुए उसमें सुधार करने का सुझाव भी दिया । उन सुझावों में मुख्य सुझाव था, माताओं-बहनों सम्बोधन न करके, मातृशक्ति सम्बोधन करना अधिक उचित है, और कारण बताते हुए उन्होंने कहा यदि हम माताओं-बहनों सम्बोधन करें, तो हो सकता है उस भीड़ में हमारी पत्नी भी बैठी हो । अतः मातृशक्ति सम्बोधन करना ठीक है । यह सम्बोधन करना मुझे कभी रूचा नहीं । इसके बाद एक सरदार जी का चुटकुला सुना था सरदार जी सम्बोधन करने खड़े हुए उन्होंने माताओं-बहनों सम्बोधन किया उन्हें फिर याद आया सामने भीड़ में उनकी पत्नी भी बैठी है तब सरदार जी ने सम्बोधन में एक वाक्य और जोड़ दिया 'इक नू छड के'। यह सोच बढ़िया सोच नहीं है । जब समूह को सम्बोधित करते हैं तब व्यक्तिगत सम्बन्ध कोई अर्थ नहीं रखता, अन्यथा शिष्टाचार, कदाचार में ही परिवर्तित हो जायेगा किसी ने एक महिला को सम्बोधन किया माता जी उसका पति बोला तू मेरी पत्नी को अपने पिता की पत्नी बनाना चाहता है । यह मूर्खता पूर्ण सोच होगी । हम मातृशक्ति कहकर क्या कहने से बचना चाहते हैं । हम माताओं-बहनों ही तो नहीं कहना चाहते क्या मातृशक्ति सम्बोधन को माताओं-बहनों से किसी भी रूप में श्रेष्ठ कहा जा सकता है, संभवतः नहीं? परन्तु कोई बात चल पड़ती है तो चल ही पड़ती है । इस सम्बोधन पर विमति करते हुए सुना था स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज आर्यसमाज सान्ताक्रूज का कोई कार्यक्रम था कुछ लोग बैठकर चर्चा कर रहे थे संयोग से उस चर्चा में, मैं उपस्थित था, तब स्वामी जी ने कहा था आप मातृशक्ति बोलते हैं, पितृशक्ति तो नहीं बोलते । जब भाषा के अर्थ सामर्थ्य से परिचित नहीं होते तब हमें शब्दों के तरह-तरह के अर्थ दिखाई देने लगते हैं । अतः एक शिष्ट सम्बोधन माताओं-बहनों के स्थान पर मातृशक्ति बोलना हमें अधिक सभ्य बनने की ओर तो नहीं ले जाता ।

शतक पारायण- आर्यसमाज ने अपने प्रचार को संक्षिप्त करना प्रारम्भ किया तो उसके उत्सव भी संक्षिप्त हो गये जहाँ उत्सव संक्षिप्त हुए तो यज्ञ को भी संक्षिप्त होना ही था । पहले और बड़े यज्ञ हो या न हो, यजुर्वेद या सामवेद पारायण हो ही जाता था । इस प्रसंग से दो हजार मंत्रों का पाठ और उस पर कुछ मंत्रों की चर्चा हो जाती थी । अब आयोजकों ने वेद के स्थान पर वेद के शतक से ही काम चलाना प्रारम्भ कर दिया । इसकी बड़ी हानि हुई आज चारों वेद से यज्ञ करने पर भी चार-सौ मन्त्रों से काम चल जाता है, जबकि छोटे वेद से पारायण यज्ञ करने पर भी दो-हजार मन्त्रों का पाठ होता था । यज्ञ के इस अवसर पर ब्रह्मचारियों को वेदपाठ करने का अवसर मिलता था । मूलवेद संहिता की पुस्तकें आयोजक वेदपाठी लेते थे । इन शतकों से मूल संहिता का भी लोप हो गया । अतः यज्ञ, वेद पारायण संहिता से किया जाए जो अधिक उचित हैं यदि एक वर्ष में संभव न हो तो एक-दो वर्ष भी लगाये जा सकते हैं । ऋग्वेद के लिए कोई पांच वर्ष भी लगाये तो भी ठीक इस प्रकार वेद का प्रसंग बना रहता है ।

वेद कथा के स्थान पर गीता कथा- कुछ पण्डित अपने यजमान को सन्तुष्ट करने के लिए वेदकथा के स्थान पर गीता की कथा करने लग जाते हैं । कथा गीता, रामायण, महाभारत की हो नहीं सकती या इन कथाओं का करना अनुचित नहीं है, परन्तु ये सब ग्रन्थ वेद का स्थान नहीं ले सकते, वेद के स्थान पर इनको स्थापित करने से हम मनुष्यों को वेद से दूर कर देते हैं । वेदकथा केवल आर्यसमाज करता है । शेष लोगों के पास गीता, भागवत, सत्यनारायण, रामायण, महाभारत सब कुछ है, क्योंकि वे लोग मनुष्य को ईश्वर से दूर रखना चाहते हैं । अतः वेद से मनुष्यों को दूर करते हैं । आर्यसमाज ईश्वर से मनुष्य को जोड़ता है । अतः प्रत्येक मनुष्य के लिए वेद का अधिकार देता है, उसके स्थान पर मनुष्यकृत ग्रन्थों को महत्व देकर ईश्वर की आज्ञा का उल्लघंन करते हैं । अतः ऋषि ने वेद के पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने को परम धर्म कहा था ।

हमें कुछ भी करने से पूर्व उसके औचित्य पर विचार अवश्य करना चाहिए । अतः कालिदास ने कहा है-

पुराणमित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम् ।
सन्तः परीक्ष्यानतरत् भजन्ते मूढः पर प्रत्ययनेय बुद्धिः ।।

परोपकारी से साभार

www.thearyasamaj.org

संसार के श्रेष्ठ पुरूषो एक हो जाओ

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना करके महान उपकार का कार्य किया था । उन्होंने आर्य समाज का उद्देश्य निश्चित करते समय उदारता का परिचय दिया और जो एक ऋषि को करना चाहिए वही उन्होंने किया । हम आर्यों के लिए ऋषि जी ने जो आदेश दिए उनका अक्षरशः अधिकाँश आर्य पालन नहीं कर रहे हैं । संगठन सूक्त, मनसा परिक्रमा और शांति पाठ के मन्त्रों का पाठ करते करते जीवन व्यतीत हो गए लेकिन न तो संगठन मजबूत हुआ न ही ईर्ष्या द्वेष खत्म हुआ और न ही शांति प्राप्त हुई । इसमें गलती न तो वेद मन्त्रों की है और न ही ऋषि दयानन्द की, कहीं गलती या भूल हुई है तो हम आर्यों से अथवा आर्य समाज के नेतृत्व से हुई है । आपस में ईर्ष्या द्वेष घृणा और बदले की भावना आर्यों का सत्यानाश करके रहेगी । आश्चर्य तो यह है कि वेद के प्रकांड विद्वानों, सन्यासियों, आचार्यों, उपदेशकों, भजनोपदेशकों व कार्यकर्ताओं तक ईर्ष्या द्वेष की आग पहुँच चुकी है । आपस में लड़ना आर्यों का काम नहीं था, हमारा काम तो ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम'' के जय घोष को सार्थक करना था । कौन करेगा ऋषि दयानन्द जी सरस्वती के सपनों को साकार? गाय का मांस खाने वाल, शराब पीने वाले, या प्रतिमा पूजन करने वाले नहीं नहीं ऋषि के सपनों को साकार करने की जिम्मेदारी आप सब आर्यों की है । महर्षि का सपना ऐसे साकार नहीं होगा वह होगा ईर्ष्या द्वेष को त्यागने से और एक एक आर्य को संगठित करने से । बिना संगठन के कुछ होने वाला नहीं है और अपनी अपनी ढपली अपना अपना राग वाले संगठनों से भी कुछ नहीं होता दीख रहा । बहुत हानि हो चुकी, कार्यकर्ता निराश हो रहे हैं । आम आदमी का विश्वास आर्य समाज से उठ रहा है । उत्सवों व यज्ञों की उपस्थिति इसका प्रमाण है । हमारा समय राष्ट्रोत्थान के लिए योजना बनाने में लगना चाहिए, वह लग रहा है एक दूसरे के खिलाफ योजना बनाने में, जो धन वेद प्रचार में पर व्यय होना चाहिए था वह खर्च हो रहा है मुकदमे बाजी में । युवा आर्य समाज से दूर भाग रहे हैं पुरानी पीढ़ी के लोग परस्पर लड़ रहे हैं । कैसे होगा वेद प्रचार ? आर्यों की परस्पर फूट के कारण अनाड़ी लोग आर्य समाज व सभाओं के पदाधिकारी बन रहे हैं । सभाओं के विवादों के कारण एक एक प्रान्त में कई सभाएं बन रही हैं । कौन रोकेगा इस विघटन को महर्षि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द तो इसे रोकने के लिए आयेंगे नहीं । यह पुनीत कार्य तो आपको ही करना है । अनावश्यक विवादों पर विराम लगाओं। अब आर्य कार्यकतों सत्यार्थ प्रकाश के कौन से संस्करण को प्रमाणिक और कौन से को अप्रमाणिक मानें ? इसका उत्तर कौन देगा ? सार्वदेशिक स्तर पर तीन गुट बने हुए हैं इनको एक करना आपका कर्तव्य है । क्या अदालत यह तय करेगी कौन असली है और कौन नकली इससे बड़ा दुर्भाग्य और नहीं हो सकता । यह आपको तय करना है कि हम सब आर्य हैं, छोटी छोटी बातों पर हम अलग अलग हो गए हैं । आर्यों का काम लड़ना है पर आपस में नहीं। आओ हम सब मिलकर लड़ें धार्मिक पाखण्ड, भ्रष्टाचार, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, नारी उत्पीडन, अश्लीलता, नशाखोरी, गौहत्या, शोषण आदि से ।

मैं एक सामान्य कार्यकर्ता हूँ, आर्य समाज से प्रेम करता हूँ, यथा शक्ति व यथा सामर्थ्य आर्य समाज का कार्य भी करता हूँ परन्तु यह अच्छी तरह से जानता हूँ आपस की लड़ाई से बेहद हानि होती है । जैसा मैंने देखा सुना व अनुभव किया वह इस में लिखा है । मैं आपसे अपील करता हूँ कि आर्य समाज व ऋषि दयानन्द के मिशन की बहुत हानि हो चुकी है भविष्य में और हानि न हो इसके लिए सभी संगठनों को येन केन प्रकारेण संगठित करो ये समय की पुकार है । आर्य समाज सभी रोगों की औषधि है । जब औषधि ही आपस की कलह से रोगी हो जाए तो रोगों का क्या निदान करेगी । एक होने का मार्ग प्रशस्त करो अन्यथा कुछ हाथ नहीं लगेगा । मुझे पूर्ण विश्वास और भरोसा है कि मेरे जैसे लाखों कार्यकर्ताओं की भावनाओं को समझते हुए आप आज से ही आर्यों के अलग अलग संगठनों को संगठित करने के लिए अवश्य प्रयास करेंगे ।

१२६ आर्य सदन हाऊसिंग बोर्ड
सेक्टर २ पलवल (हरयाणा)
चल दूरभाष ९४१६२६७४८२, ८०५३३५५४९६

www.thearyasamaj.org

यह आपदा पुकार-पुकार कर कह रही है कि हे मानव ! अब भी समय है, धरती माँ के प्राण न सुखाओ

-सय्यद मुबीन ज़ेहरा

अपने घर में पंखे की ठंडी हवा के बीच आरओ का पानी पीते हुए टीवी पर प्राकृतिक आपदा को देख कर टिप्पणी करना आसान है, लेकिन तबाही को अपनी आंखों के सामने होते देखना अलग बात है। उत्तराखंड से बच कर आए लोगों ने दुख और विनाश का जो आंखों देखा हाल सुनाया है, उससे किसी भी नरम-दिल व्यक्ति के प्राण कांप जाएंगे। इस प्राकृतिक आपदा से हुई तबाही को देख कर यही खयाल आया कि क्या प्रकृति हमसे बदला ले रही है? जो नदी गंगा मां कहलाती हो, जिसका पानी अमृत कहा जाता हो, वही गंगा अपने बच्चों को बहा ले जाए तो यह हमारे लिए गंभीरता से सोचने का विषय है। प्रकृति के इस प्रकोप और तबाही को देख कर मन अशांत हो गया है। ऐसी तबाही अगर पहाड़ों को लील सकती है तो हम मैदानी इलाकों में रहने वालों की क्या बिसात ! क्या हम इस विनाशलीला से कुछ सीख ले पाएंगे? क्या हम धरती और प्रकृति का गला घोंटना बंद करेंगे? दुख की बात यह है कि आज हम जिस तरह बाजारवाद के शिकार हो चुके हैं, उसे देखते हुए इन प्रश्नों के उत्तर आशा नहीं जगाते हैं।

कुछ दिन तक अफसोस की आंधी चलेगी, चिंता भरे भाषणों और लेखों की बाढ़ आएगी और फिर मायूसी की चट्टान से टकरा कर नाकामी की चादर ओढ़ सो जाएगी। दुनिया भर में प्राकृतिक आपदाओं और मौसम के उतार-चढ़ाव में तीव्रता आई है। यूरोप में आए बर्फीले तूफान, जापान और भारत में आई सुनामी और चीन में आई बाढ़, ये सब इस बात के संकेत हैं कि भूमंडलीय पर्यावरण लगातार बिगड़ रहा है। प्रकृति अपने रौद्र रूप से यह संदेश देना चाह रही है कि अपने जीवन के लिए मुझे बचाओ। लेकिन मनुष्य कृत्रिम विकास के नाम पर यह सुनने को तैयार नहीं है।

उत्तराखंड में जो हुआ है, उसके लिए हम सब जिम्मेवार हैं। अब धार्मिक स्थल भी बाजार के शिकार हो चुके हैं। अब लोग वहां आध्यात्मिक भूख के बजाय पर्यटन की लालसा से अधिक जाते हैं। इन क्षेत्रों में जब लाखों लोग जाते हैं तो कोमल-हृदय पहाड़ों का कण-कण हिलने लगता है। पर्यटक वहां लाखों टन कूड़ा छोड़ आते हैं, जिन्हें संभालने का कोई जरिया नहीं है। यह कूड़ा-करकट, जिसमें अधिकतर प्लास्टिक होता है, पहाड़ो का दम घोंटने का काम करते हैं। इसके अलावा खनन और भूमाफिया मिल कर पहाड़ों को खोखला करने में लगे रहते हैं। इन्हें हर राजनीतिक पार्टी का खुला समर्थन मिला होता है।

इस तरह नदियों के स्वाभाविक रास्ते बदल दिए जाते हैं। किनारों को पाट कर आबादी को बसाने का काम होता है। जब ये नदियां अपने असली रास्ते पर निकलती हैं तो निर्माण-कार्यों के लिए काटे गए पेड़ों के कारण ढीली हो चुकी मिट्टी को भी अपने साथ बहा ले आती हैं। यह बहाव प्रलय का रूप ले लेता है और इसके रास्ते में आने वाली हर चीज तबाह हो जाती है।

असल में यह प्राकृतिक आपदा नहीं बल्कि मानव-प्रायोजित परोक्ष कत्लेआम है। पिछले वर्ष हिमाचल के सोलन में जाना हुआ था। वहां हमने देखा कि जंगल समाप्त हो चुके हैं। उनकी जगह कंक्रीट के जंगलों ने ले ली है। कालका से शिमला रेलवे लाइन के साथ-साथ भवनों के निर्माण और कूड़ा-करकट फेंकने का काम इस गति से हो रहा है कि अब लोग पहाड़ पर जाना ही छोड़ देंगे। वहां मौसम भी बदल रहे हैं। हम मैदानी लोगों की सोच पहाड़ों पर हावी हो रही है। अपने शहरों को देख लीजिए। दिल्ली में अनधिकृत कॉलोनियों को वोट के गणित के चलते पास करने की मजबूरी है।

अतिक्रमण हर तरफ है। मैदान जब इस प्रकार के अतिक्रमण को नहीं झेल पा रहे हैं, तो अगर पहाड़ों पर भी हम यही सब करेंगे तो क्या अपनी कब्र खुद नहीं खोदेंगे? यही हुआ है। आज लोग टनों मिट्टी के नीचे गुम हो गए। मरने वालों की वास्तविक संख्या सरकारी आंकड़ों से कहीं अधिक है। कई पूरे के पूरे गांव समाप्त हो गए हैं। हजारों लोग इधर-उधर फंसे हैं। प्रकृति हमसे बदला लेने पर उतर आई है। मगर हम संभलना भी चाहें तो शायद संभल नहीं सकते, क्योंकि हम स्वार्थ की अंधी डगर पर चल रहे हैं।

अगर सेना और भारत-तिब्बत सीमा पुलिस के जवान न होते तो हजारों यात्री पहाड़ों पर भूखे-प्यासे भटकते हुए प्राण गंवा

www.thearyasamaj.org

धर्मः एक वैज्ञानिक विश्लेषण

वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार

धर्म की प्रशंसा एवं आवश्यकता के विषय में बहुत कुछ कहा गया है। यहाँ उसका पिष्टपेषण अभीष्ट नहीं है, केवल संक्षेप में ही कुछ कह देना पर्याप्त होगा। यहाँ हमारा उद्देश्य धर्म के स्वरूप पर विचार करना है। **'एक एव सुहृद् धर्मो निधनेऽप्युनुयाति यः।' धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः,** आदि उक्तियाँ इस विषय में हैं। अथर्ववेद में तो पृथिवी को ही 'धर्मणा धृता' धर्म के द्वारा स्थित कहा गया है। एक कवि ने तो धर्म से रहित व्यक्ति को पशुओं के तुल्य ही माना है। इस प्रकार धर्म की आवश्यकता तो निर्विवाद है। प्रश्न है कि धर्म का स्वरूप क्या है?

इस विषय में भी धर्म के अनेक लक्षण एवं परिभाषाएँ दी गई हैं। कहीं **'अहिंसा परमो धर्मः'** कहकर अहिंसा को भी परम धर्म मान लिया गया तो कहीं पर **'नास्ति सत्यात् परो धर्मः नान्तात् पातकं परम्'** कह कर सत्य को ही परम धर्म कहा गया है। प्रश्न है कि क्या सर्वत्र, सर्वदा अहिंसा एवं सत्य का पालन किया जा सकता है? यदि किया ही जाए तो क्या इसमें अपना तथा अन्य जनों का जीवन सुरक्षित रह सकता है? चोर, डाकू, लुटेरे, आतंकवादी के साथ यदि आप 'अहिंसा परमो धर्मः' का जप करेंगे तो जीवन नहीं बचेगा। वहाँ दुष्ट-हिंसा अनिवार्य है। वस्तुतः यह परिभाषा बौद्ध काल की है, जबकि सम्राट् अशोक ने युद्ध का मार्ग छोड़कर अहिंसा

शेष भाग अगले पृष्ठ पर .....

बैठते। कैग की दो महीने पहले आई रिपोर्ट के मुताबिक उत्तराखंड आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने 2007 में अपनी स्थापना से लेकर अब तक एक भी बैठक नहीं की है। इसने छह वर्षों में कोई नियम और नीतियां तक नहीं बनाई हैं। ऐसा इसलिए हुआ होगा क्योंकि हर पार्टी को बिल्डरों और उद्योगपतियों की फिक्र रहती है। ऊपर से एक दूसरे को कोसने वाले क्या आपको आपस में मिले हुए नहीं लगते? आपदा प्रबंधन नाम की कोई चीज जैसे हमारे देश में है ही नहीं। क्या हम इस तरह भारत निर्माण कर पाएंगे? किसी भी आपदा में लोगों तक राहत पहुंचाना सरकार की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। तबाह हुए लोगों का पुनर्वास भी।

इस तबाही के बाद की दास्तान और भयावह होगी। जो अकेले बच गए होंगे, उनके दुख का अंदाजा लगाया जा सकता है। हमारा समाज जो आमतौर पर दुख में लूट के चलन में विश्वास रखता है, वह उन अकेली रह गई महिलाओं के साथ किस प्रकार पेश आएगा, जिनके अपने सब खत्म हो गए हैं। उन नन्हें बच्चों को कौन संभालेगा, जिनके माता-पिता उन्हें बेसहारा छोड़ गए हैं। ऐसी कई परेशानियां हैं जिनसे आपदा के बाद समाज को निपटना होगा। उत्तराखंड को पुनर्निर्माण की चुनौती से जूझना पड़ेगा। यह भी हैरानी की बात है कि ऐसे समय में जब आपदा से उत्तराखंड लहूलुहान है, उन बहुराष्ट्रीय कंपनियों की ओर से किसी प्रकार की सहायता का अभी तक एलान नहीं किया गया है, जिनके उद्योगों को विकास के नाम पर बढ़ावा देने के कारण ही प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता है। वे अब भी क्रिकेट मैच के दौरान टीवी पर शीतल पेय से लेकर चिप्स तक के विज्ञापन दिखाने में मशगूल हैं।

उत्तराखंड में मची तबाही बताती है कि हम अपनी देवभूमि की प्राकृतिक संपदा को बेतहाशा लुटाने में लगे रहे हैं। टीवी चैनलों पर इस तबाही को देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है मानो हम अपनी भूलों-गलतियों का प्रमाणपत्र देख रहे हों। यह आपदा पुकार-पुकार कर कह रही है कि मानव, अब भी समय है, धरती मां के प्राण न सुखाओ। हमें खुद को एक बार फिर प्रकृति के अनुसार ढालना होगा। बाजार हमें कृत्रिम जरूरतों का आदी बना रहा है। जरूरत न होते हुए भी हम ऐसी चीजों का प्रयोग कर रहे हैं, जो प्रकृति पर बोझ बन रही हैं। घर रहने के लिए चाहिए, मगर आज घरों के विज्ञापन देखिए तो घर पूंजी निवेश का माध्यम बन गए हैं। वातानुकूलन की बढ़ती चाहत आसपास के वातावरण को गर्म करती जा रही है। बोतलबंद पानी और डिब्बाबंद खाना कचरे के पहाड़ खड़ा कर रहे हैं। हमें अपनी जड़ों की ओर लौटना होगा। नहीं तो बाजार हमें विकास के नाम पर विनाश थमा देगा। फिर विनाश के बाद के विकास से भी अपनी पूंजी बढ़ाने में जुट जाएगा। शायर तहरीन मुनव्वर के शब्दों में-

'वह जो बाजार के खिलाड़ी हैं। तेरा हर ख्याब बेच डालेंगे।
कल तो सूखे को बेच डाला था। अब के सैलाब बेच डालेंगे।'

-जनसत्ता से साभार

www.thearyasamaj.org

का मार्ग अपना लिया था । जैनमत में भी इसका अधिक प्रचार किया गया । अहिंसा का मार्ग अपना कर यह देश बहुत कमजोर हो गया, शौर्य समाप्त हो गया । कुछ लोगों को सम्भवतः यह भी भ्रम है कि अहिंसा के बल पर ही भारत को स्वतंत्रता मिली । ऐसा कहना स्वतत्रंता की बलिवेदी पर हँस-हँस कर अपने प्राणों की आहुति देने वाले वीरों का अपमान है । अंग्रेजों के दिलों को इन वीरों के बलिदानों ने, नेताजी की आजाद हिन्द फौज ने तथा भारतीय जनता के विप्लव ने दहला दिया था । व्यक्तिगत, सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवन में दुष्टों की हिंसा अनिवार्य है, हाँ, निरपराध की हिंसा नहीं करनी चाहिए, यही धर्म है ।

सत्य का भी यही हाल है । यह भी सार्वकालिक एवं सार्वदेशिक धर्म नहीं बन सकता । प्रसिद्ध उदाहरण है कि आपके सामने से कोई गाय गई है तथा थोड़ी देर में वधिक आकर पूछता है कि गाय किधर गई, तो क्या यहाँ पर आपका सत्य बोलना धर्म है? कदापि नहीं । ऐसे में मिथ्या बोलकर ही गाय की रक्षा की जा सकती है, यही धर्म है । धर्म वह है, जिससे प्राणियों की रक्षा हो । इसीलिए योग दर्शन के भाष्यकार व्यास जी कहते हैं कि कहीं हुई वाणी से यदि प्राणियों का विनाश होता है तो वह सत्य नहीं मानी जायेगी । इस प्रकार सिद्धान्त निश्चित हुआ है कि स्वार्थ वश या किसी को धोखा देने के लिए मिथ्या नहीं बोलना चाहिए । प्राणियों के उपाकारार्थ मिथ्या बोलना भी धर्म है ।

मनु ने भी धर्म के लक्षण कहे हैं । इनमें वेद, स्मृति, सदाचार तथा अपने आत्मा को जो प्रिय लगे ये चार धर्म के साक्षात् लक्षण माने गए हैं । वेदों तथा स्मृतियों में जो कुछ कहा गया है, सज्जनों का आचरण तथा आत्मप्रिय कार्य धर्म हैं, किन्तु यह तो तलाश करना पड़ेगा कि वहाँ पर क्या कहा गया है?

मनु ने ही अन्यत्र धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय विनिग्रह आदि को धर्म का लक्षण कहा है । यह परिभाषा भी अपूर्ण है । **इसलिए स्वामी दयानन्द ने इन लक्षणों में अहिंसा को भी जोड़ दिया** । इसी प्रकार इनमें अन्य गुणों को भी जोड़ा जा सकता है । अक्रोध को भी यहाँ पर धर्म का लक्षण माना गया है, किन्तु यह अनिवार्य प्रतीत नहीं होता । क्षमा को भी यहाँ धर्म का लक्षण कहा है, किन्तु सर्वत्र इसका पालन भी नहीं किया जा सकता न ही करना चाहिए । यथा, पृथ्वीराज ने मुहम्मद गौरी को सोलह बार क्षमा कर दिया । यह धर्म था या अधर्म? यह विचारणीय है । यह सरासर अधर्म था । विधर्मी शत्रु को क्षमा करने का अर्थ अपना विनाश है । अपना ही नहीं, अपितु प्रजा का भी विनाश है, क्योंकि पृथ्वीराज तो राजा था । धर्म यही था कि अन्यायी विधर्मी को कब्जे में आने पर प्रथम बार में ही समाप्त कर दिया जाए । नीतिकार कहते हैं कि शत्रु तथा अग्नि को प्रकट होते ही नष्ट कर देना चाहिए, अन्यथा ये दोनों ही बढ़ते ही चले जायेंगे तथा विनाशक बन जायेंगे । तरावडी के प्रथम युद्ध में पृथ्वीराज के भाई ने मुहम्मद गौरी को घायल करके छोड़ दिया, जान से नहीं मारा । इसी गौरी ने पृथ्वीराज के पकड़ में आते ही उसकी आँखें फुड़वा दीं तथा बन्दी बनाकर अपने देश ले गया । क्षत्रियों में शरणागत की रक्षा को भी धर्म माना गया है, किन्तु यदि कोई दुष्ट इसका लाभ उठाकर छलकपटपूर्वक राज्य में आ जाता है तो उस अन्यायी को अभयदान देना धर्म नहीं कहा जा सकता, क्योंकि अवसर पाते ही वह दुष्ट आपके जीवन को संकट में डाल देगा । हाँ, कोई निष्कपट भाव से शरण में आ रहा है तो उसकी रक्षा करना धर्म है । गौर देश के शासक अलाउद्दीन के भय से गजनी का शासक मीर वहाँ से भागकर भारत आ गया । पृथ्वीराज चौहान ने उसको शरण दे दी । यह महमूद गजनवी का वंशज था, इसे शरण देने से गौरी पृथ्वीराज का शत्रु बन गया ।

शास्त्रों में धर्म की जो परिभाषाएँ दी गई हैं, उनमें दो-तीन पर यहाँ विचार किया जाता है । वैशेषिक दर्शन में कहा गया है- **'यतोऽभ्युदयनिश्रेयस् सिद्धिः स धर्मः ।'** अर्थात् जिससे इस लोक तथा मोक्ष की सिद्धि हो, वही धर्म है । कुछ स्पष्टता नहीं है इसमें कि वह धर्म नामक तत्व है क्या? दूसरी बात इस लोक की सिद्धि सफलता का क्या अर्थ है? लोक में धन को ही सर्वप्रमुख माना जाता है । धन के आधार पर ही सुख प्राप्ति होती है । यह भी स्पष्ट है कि धन तो ऐसे स्त्रोतों से भी प्राप्त होता है जिन्हें हम निन्दनीय समझते हैं तो धर्म क्या हुआ? इसका उत्तर यह है कि वहाँ पर अभ्युदय- अभि+उदय शब्द पड़ा है । इसका अर्थ है सभी प्रकार की उन्नति । जीवन का लक्ष्य सर्वांगीण उन्नति है, केवल धन प्राप्ति नहीं । केवल धन प्राप्ति ही जीवन की सफलता नहीं है । सुख के साथ शान्ति भी जीवन का लक्ष्य है । यह धन के आधार पर नहीं मिल सकती । जिन कार्यों के द्वारा तन-मन प्रसन्न रहे, बुद्धि शान्त रहे तथा आत्मा आनन्द युक्त हो, वे ही धर्म हैं । अन्याय से कमाए गये धन में ये गुण नहीं हो सकते । मोक्ष की सिद्धि भी साथ जुड़ी है । यह तो सत्य, न्याय, अहिंसा, अस्तेय, यज्ञ, ईश्वरभक्ति आदि के आधार पर

www.thearyasamaj.org

ही संभव है। ऐसे गुण ही संसार में शान्ति स्थापित कर सकते हैं। इसीलिए महाभारतकार ने कहा **'धर्मो धारयते प्रजाः'**। धर्म ही प्रजा को धारण करता है, विनाश से बचाता है। व्यास जी ने धर्म का एक व्यावहारिक लक्षण दिया है कि **'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्'** अर्थात् जो कार्य आपको अपने लिए अच्छे न लगें, उन्हें दूसरों के लिए मत करो, यही धर्म सर्वस्व है। यह तो धर्म का एक व्यावहारिक एवं दार्शनिक स्वरूप हुआ, किन्तु संसार में सभी मनुष्यों ने तो इसे रूप में ग्रहण नहीं किया हुआ। प्रश्न है कि जो व्यक्ति धर्म के किसी भी स्वरूप या परिभाषा को मानने को तैयार नहीं, उनके सामने आपका यह धर्म क्या करेगा। वे तो ऐसे धर्म तथा उसके धारक धार्मिक व्यक्ति को अपना शिकार बनाने में कोई कसर उठाकर नहीं रखते। उन खूंख्वार, छली, कपटी, हत्यारों के सामने आपका यह सत्य, न्याय, दया आदि गुणयुक्त धर्म निरर्थक है। उसके साथ तो दूसरा धर्म ही कार्य करेगा, और वह है – **'शठे शाठ्यं समाचरेत्।'** दुष्ट के साथ सज्जनता का व्यवहार आत्मघातक है। जैसे भी हो, वैसे ही उस दुष्ट का नाश करना ही वहाँ ही उस दुष्ट का नाश करना ही वहाँ पर धर्म है। महाभारत में कीचड़ में रथ का पहिया फँस जाने पर जब निहत्थे कर्ण ने अर्जुन को धर्म की दुहाई देकर बाण छोड़ने से रोकना चाहा तो श्री कृष्ण ने इसका उत्तर यही कह कर दिया था कि चक्रव्यूह में फँसे जाने पर अकेले अभिमन्यु को कई महारथियों द्वारा मारा जाने पर तुम्हारा धर्म कहाँ चला गया था? इसलिए लोक धर्म यह है **'यस्मिमन् यथा वर्तते यो मनुष्य स्तस्मिंस्तथा वर्तितव्यं स धर्मः।'** अर्थात् जो व्यक्ति जैसा व्यवहार करता है, उसके प्रति वैसा ही व्यवहार करना धर्म है। इसलिए श्री कृष्ण ने उस अवस्था में निहत्थे कर्ण का वध अर्जुन से करा दिया। महाकवि भारवि कहते हैं कि जो लोग छली कपटी, दुष्टों के साथ वैसा ही व्यवहार नहीं करते वे पराजय को प्राप्त होते हैं। इस लोक धर्म का पालन न करने के कारण हमें पराजय का मुँह भी देखना पड़ा तथा अपना धर्म भी गँवाना पड़ा। यथा अलाउद्दीन खिलजी को दर्पण में रानी पद्मिनी का दर्शन कराकर जब चित्तौड़ के राजा खिलजी को विदा करने उसके साथ गये तो खिलजी ने धोखे से उन्हें बन्दी बना लिया। यदि खिलजी के भावों को भाँपकर स्वयं पहले ही उस पर आक्रमण कर देते तो वह दुर्दिन न देखना पड़ता। सोमनाथ पर आक्रमण के समय महमूद गजनवी ने अपनी सेना के आगे 300 गायें खड़ी कर दीं। धर्मभीरू हिन्दू सैनिक उन पर प्रहार न कर सके। फलस्वरूप मुस्लिम सेना जीत गई बाद में उन्हीं मुस्लिमों ने अनेक गउओं तथा गौ भक्तों को यमलोक पहुँचा दिया। यदि उस समय कुछ गायों का बलिदान देकर गोघातक मुस्लिम सेना को परास्त कर दिया होता तो हिन्दू धर्म तथा गोवंश की रक्षा हो जाती। इसी धर्म को **'शठे शाठ्यं समाचरेत्'** **'कण्टकः कण्टकेनैव शाम्यति'** **'जैसे को तैसा'** कहा गया है। जिन्होंने इसका आश्रय लिया, वे विजयी रहे हैं। शिवाजी ने, सन्धि के बहाने बुलाकर शिवाजी को मारने का अफजल खाँ की योजना को जानकर उससे पहले ही अफजल खाँ को मार दिया था।

संसार में जो हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, पारसी आदि मजहब या सम्प्रदाय धर्म के नाम से जाने जाते हैं, यहाँ धर्म का कुछ अन्य ही स्वरूप है। ये धर्म अपनी कुछ विशेष मान्यताओं के आधार टिके हैं। इन्हें देखने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि ऐसा लोकधर्म श्रद्धा, सेवा तथा शक्ति के आधार पर फैला है। शक्ति चाहे तलवार की रही हो, धन की रही हो या राज्य की रही हो। जिसे भी यह शक्ति मिली, वहीं धर्म संसार में फैला तथा उसने इसी शक्ति के आधार पर अन्यों को कुचल दिया। मुस्लिम आक्रमणकारियों ने शक्ति के आधार पर हिन्दूओं को जबरदस्ती मुसलमान बनाया, परिणामस्वरूप पूरे भारत में मुस्लिम मत फैल गया, अन्यथा विदेशों से तो थोड़े ही मुसलमान यहाँ आये थे। इसी प्रकार ईसाईयों ने भी तलवार के बल पर ईसाई मत फैलाया है, इसके साथ ही धन का बल भी इसके साथ है। विदेशों से अरबों रूपया ईसाईयों एवं मुसलमानों के पास इनके संगठनों को सहायता के रूप में प्रतिवर्ष आता है जिसके आधार पर हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन किया जाता है। धर्मान्तरण होते ही उन व्यक्तियों की निष्ठा भी बदल जाती है। इस धर्म के आगे आपके तप, त्याग, सत्य, अहिंसा आदि कुछ काम नहीं आयेंगे। इनका प्रतिरोध तो उन जैसे उपाय अपना कर ही किया जा सकता है। हिन्दू ऐसा नहीं कर रहे हैं, इसलिए यह धर्म सिमटता तथा मिटता चला जा रहा है।

श्रद्धा भक्ति के तथा विश्वास के आधार पर भी धर्म फैलता है। भारत में पौराणिक धर्म फैलने का कारण यह श्रद्धा भक्ति तथा विश्वास ही तो है कि मन्दिर में जाकर मूर्ति पर पुष्प आदि चढ़ाकर जो माँगो वह मिल जाता है। वैदिक धर्म ऐसा नहीं मानता, इसलिए इसके मानने वालों की संख्या भी कम है। राज्य की शक्ति के आधार पर भी धर्म फैलता है। बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में सम्राट अशोक का

www.thearyasamaj.org

बहुत योगदान रहा है । इसी प्रकार आदि शंकराचार्य ने सुधन्वा राजा की सहायता से वैदिक धर्म का प्रचार तथा बौद्ध धर्म का पराभव किया था । यहाँ पर मनु का, व्यास जी का बतलाया धर्म काम नहीं आयेगा ।

सेवा एवं श्रद्धा-भक्ति के आधार पर फैलने वाले किसी भी अवैदिक मत को आप अन्ध श्रद्धा का फल कह कर छोड़ नहीं सकते । अन्धी ही सही, श्रद्धा तो वहाँ है । इसके अभाव में सत्य वैदिक धर्म भी नहीं फैल सकता । अन्धे ही सही, श्रद्धा तो वहा. है । इसके अभाव में सत्य वैदिक धर्म भी नहीं फैल सकता । अन्धे व्यक्ति नेत्रों वालों से भी अधिक कार्य कर देते हैं । यही हाल अन्ध श्रद्धा का है ।

इस प्रकार हमें धर्म के शास्त्रीय एवं दार्शनिक स्वरूप के साथ-साथ उसके लोक प्रचलित स्वरूप तथा प्रभाव को भी देखना होगा । अवैदिक धर्म जिन साधनों के आधार पर फैलता है, उनके मूल में जाकर ही उसका प्रतिरोध किया जा सकता है, अन्यथा नहीं । सत्य वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए धर्म के नाम चलने वाले पाखण्ड, बर्बरता एवं छद्म सेवा भाव का वास्तविक स्वरूप जनता के रखना होगा, अन्यथा अन्धविश्वास में जकड़ी जनता तो इसे ही वास्तविक समझती रहेगी ।

धर्म के नाम शीश कटाने पर भी गर्व किया जाता है । यह भी नासमझी की बात है । धर्म के नाम शीश कटाने नहीं चाहिए, अपितु अत्याचारी, अन्यायी अधर्मी का शीश काट लेना चाहिए । धर्म तभी जीवित रहेगा । शीश कटाने से धर्म का आधार नष्ट होने से धर्म भी नष्ट हो जायेगा । मुस्लिम शासन से अपना सतीत्व बचाने के लिए रानी पद्मिनी सहित असंख्य राजपूतानियों का जौहार इतिहास की धरोहर है । इस पर हमारा सिर उन वीरांगनाओं के आगे सादर प्रणत तो है, किन्तु यदि वे स्वयं चिता में न जलकर हाथों में तलवारें लेकर शत्रु पर भूखी बाघिन की भाँति टूट पड़ती तो असंख्य शत्रुओं को मौत के घाट उतार सकती थीं । रानियाँ युद्ध विद्या में निपुण होती थीं । पराजय की स्थिति में एक दूसरे की छाती में कटार भोंक कर या स्वयं ही अपना सिर कलम करके भी कीर्तिमान स्थापित किया जा सकता था । यह कार्य चिता में जीवित जलने से तो लाख गुणा श्रेष्ठ होता । बिना युद्ध किये मरना कायरता है ।

बी-२६६, सरस्वती विहार नई दिल्ली-११००३४

सत्यार्थ सौरभ से साभार

.....***.....

काव्य सलिला

एक ज्वलंत प्रश्न - एक विचार

ओमप्रकाश बजाज

समूहिक बलात्कार, उत्पीड़न, अनाचार,
दुधमुंही बच्चियों से लोमहर्षक व्यभिचार,
संवेदनाशून्य पुलिस, उदासीन सरकार
बढ़ता जनाक्रोश, सहमा सहमा हर परिवार
जनप्रतिनिधियों के बेतुके बयानों की भरमार
घावों पर नमक रगड़ते धर्म के ठेकेदार
ऐसे में हमें करना होगा स्वयं विचार
क्यों बढ़ रही है ऐसी घटनाओं की रफ्तार.
समाजशास्त्रियों को इस चुनौती को स्वीकारना होगा
सामयिक नहीं वास्तविक कारणों को पहचानना होगा
इस महारोग की जड़ को खोज निकालना होगा.
वर्षों से लगातार हो रही कन्या भ्रूण हत्याओं ने,
कुछ प्रदेशों में लड़कियों की संख्या
खतरनाक हद तक घटाई है,
विवाह योग्य युवाओं के लिए वधु मिलने में
निरन्तर बढ़ रही कठिनाई है,
ऐसे कुछ बिन ब्याहे निरंकुश कुण्ठापीड़ित युवक भी
ऐसी घिनौनी राह अपनाते हैं
वैसा संग साथ परिवेश अवसर मिल जाने पर
ऐसे कुकर्म में लिप्त हो जाते हैं.
पुत्र मोह से छुटकारा पाना ही नहीं
पुत्र पुत्री के पालन पोषण में भेदभाव भी मिटाना होगा
बेटियों पर ही रोकटोक नहीं
बेटों पर भी नियंत्रण बढ़ाना होगा.

ओमप्रकाश बजाज
बी-2, गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर-482001 म.प्र.
फोन: 0761-2426820 मो:. 9826496975
ई-मेल : opbajaj@gmail.com

.....***.....

www.thearyasamaj.org

विज्ञान की दृष्टि से सिर दर्द में होने वाले परिवर्तन

डॉ. नागेन्द्र कुमार 'नीरज'

सिरदर्द- या माइग्रेन में दिमाग की रक्त वाहिनियों के अन्दर स्थित पेशियों में सिकुड़न पैदा होती है। रक्त वाहिनियाँ संकरी हो जाती हैं। फलतः दर्द की अनुभूति होती है। माइग्रेन से मस्तिष्क में स्थायी आघात नहीं होता है, दौरे के पश्चात् दिमाग अपना काम सही ढंग से करने लगता है। माइग्रेन के दौरे के समय आँखें प्रकाश के प्रति संवेदनशील तथा रेटिना में स्थित रक्त वाहिनियाँ संकरी हो जाती हैं।

मस्तिष्क के जिस हिस्से में सिर दर्द होता है उस हिस्से में 20-25 प्रतिशत खून का दौरा कम हो जाता है। उन हिस्सों में सूक्ष्म खून की नलियाँ आर्टिरियोल्स तंग होने से रक्त प्रवाह काफी हो जाता है। प्रयोगों से यह भी देखा गया है कि दिमाग में खून का दौरा सामान्य से अधिक होने से खोपड़ी के ऊतकों में दर्द की अनुभूति होती है। दिमाग में रक्त प्रवाह अस्त-व्यस्त होने से दिमाग को भरपूर पोषण नहीं मिलता है। सिर दर्द या माइग्रेन की स्थिति में खून में नारएड्रिनलिन तथा प्रोटोजिन की मात्रा बढ़ जाती है। नारएड्रिनलिन रक्त को जमाने वाले घटक प्लेटलेट्स से जुड़कर गुच्छा बनाती है या टूट जाते हैं जिसमें सेरीटोनिन का स्त्राव बढ़ जाता है। इनके कारण रक्तवाहिनियाँ और तंग, संकरी हो जाती हैं। इसके तुरन्त बाद खून में सिरोटोनिन का स्तर अचानक कम हो जाता है जिससे खोपड़ी के ऊतकों तथा दिमाग के चारों तरफ की झिल्लियों में स्थित खून की नलियाँ ढीली तथा चौड़ी हो जाती है। रक्त प्रवाह गड़बड़ हो जाता है। परिणामस्वरूप दर्द के रूप में अनुभूति होती है। पैतृक गुणों के कारण भी कुछ लोगों के रक्त-रसायनों में जन्मजात विकृति के कारण सिर दर्द तथा माइग्रेन होते हैं।

उपचार- रक्त विषाक्तता से उत्पन्न सिर दर्द में सर्वप्रथम पेट तथा सिर का गरम-ठंडा कम्प्रेस करने के बाद पेट, सिर तथा रीढ़ की मालिश देकर एनिमा देने के बाद गरम पाद स्नान दें। कब्ज को दूर करना ही सिर दर्द की प्रधान चिकित्सा है। पित्तजन्य सिर दर्द कुंजर करने से दूर हो जाता है। अस्थायी लाभ के लिए सिर का गरम-ठण्डा कम्प्रेस अथवा स्थानीय वाष्प देकर सिर पर ठण्डी पट्टी दें। सिर में खून की अधिकता से उत्पन्न सिर दर्द में सिर पर मिट्टी की पट्टी अथवा ठंडी गीली पट्टी 20 मिनट के अन्तर से बदलते रहें। गरम पाद स्नान देने से खून पैरों की तरफ आ जाता है। फलतः सिर के तरफ रक्त परिभ्रमण कम हो जाता है रात्रि को सोते समय पिण्डलियों की लपेट लें। खून की कमी से उत्पन्न सिर दर्द में गर्दन के पीछे गरम या गरम-ठण्डा सेंक दें अथवा स्थानीय वाष्प देकर लपेट दें। निम्न रक्तचाप या रक्तहीनताजन्य सिर दर्द में सुबह-शाम 30-30 मिनट के लिए स्लेंटिंग चारपाई (पायदान की तरफ एक-एक ईंट लगाकर) पर सोएँ। रोगी की स्थिति के अनुसार कटि स्नान, रीढ़ स्नान, स्पंज बाथ तथा मेहन स्नान दिया जाता है। खुले वातावरण में रहना, सोना तथा भरपूर नींद लेना, सिर दर्द को ठीक करता है। तनाव मुक्त होकर विश्राम करें। शवासन तथा ध्यान करें। दीर्घ श्वसन प्राणायाम करें। सिर के साथ सारे शरीर की मालिश भी सिर दर्द के लिए उपयोगी है। उतावलापन, तनाव तथा अवसाद से बचें। जैसे ही सिर दर्द प्रारम्भ हो, सिर का गरम-ठण्डा सेक तथा अन्य उपचार प्रारम्भ करें। प्रायः सिर दर्द खोपड़ी के अन्दर की रक्तवाहिनियों के फैलने तथ चौड़ा होने से पैदा होता है। अतः ठण्डी मिट्टी की पट्टी देकर चौड़ा होने से रोकें। उपयुक्त खाद्य पदार्थों को, जिनसे बार-बार सिर दर्द या माइग्रेन होने की संभावना है, नहीं लें। कुछ दिन फलाहार तथा रसाहार पर ही रहें। पित्ताशय की खराबी, उच्चरक्तचाप, मासिक धर्म, गर्भनिरोधक गोलियाँ, एसीडिटी, कब्ज, सर्दी, जुकाम, सर्वाइकल स्पॉण्डिलाइटिस, अधिक झुकना, सिर ऊपर करके अधिक गर्मी में काम करना, सिर झुकाकर बागवानी या अन्य काम करना गलत ढंग से सोना, सिगरेट का धुँआ, दुर्गन्धित वातावरण, शराब वाली काकटेल पार्टी, चश्मे में प्रयुक्त गलत लेन्स, पर्यटन आदि स्थितियों में माइग्रेन या सिर दर्द और अधिक उग्र हो जाता है।

आहार चिकित्सा- प्रारम्भ में रोगी को 5 दिन फलोपवास तथा 5 दिन रसोपवास कराकर धीरे-धीरे सामान्य आहार पर लायें। पित्तजन्य सिर दर्द में नींबू, टमाटर आदि खट्टे फल नहीं दें। फलोपवास या रसोपवास में प्रत्येक 3 घंटे के अन्तराल से एक समय एक प्रकार का फल या एक प्रकार की सब्जी या फल का रस दें। रोगी को तीन-चार दिन नींबू, शहद अथवा संतरे के रस में पानी मिलाकर पिलाएँ। 5 दिन

www.thearyasamaj.org

फलाहार पर रखें, उसके बाद उबली सब्जी तथा धीरे-धीरे दलिया, रोटी देते हुए पूर्ण आहार पर लाएँ ।

योग चिकित्सा- गर्मी के कारण होने वाले सिर दर्द में जलनेति, पित्तजन्य सिर दर्द में कुंजर तथा शीतली प्राणायाम करें । रक्त की कमी से उत्पन्न सिर दर्द में विपरीतकरणी, सर्वांगासन, हलासन श्रृंखला तथा शीर्षासन भूलकर भी न करें । जानुशीर्षासन, अर्द्धमत्स्येन्द्रासन, पश्चिमोत्तानासन, वज्रासन, योगमुद्रा, पद्मासन, ध्यान, शलभासन, भुजंगासन, नौकासन योग चिकित्सक के निर्देशन में करें ।

उपचार नहीं आराम- गाय का ताजा घी या सरसों का तेल अथवा रीठे या पुनर्नवा को पानी में खूब महीन पीसकर कपड़े से निचोड़कर दो-दो बूँद नाक में टपकाएँ । नाक में कफ, खून आने या संक्रमण की स्थिति में घी अथवा सरसों का तेल डालकर गहरा साँस लेकर ऊपर खींचे । रीठे का प्रयोग नहीं करें । रात को पाँच बादाम गिरी भिगोकर प्रातःकाल पीसकर घृत में गाय के गर्म दूध में मिलाकर पिएँ । पुराना सिर दर्द ठीक होता है । दालचीनी, चंदन या बेल को पीसकर सिर पर लेप करें । सूर्योदय के साथ दर्द में 11 ग्राम गुड़ में गाय का घी मिलाकर खाएँ लाभ होगा । एक ग्राम अफीम तथा दो लौंग पीसकर सिर पर लेप करें, सर्दजन्य सिर दर्द ठीक होता है । केसर को घी में पीसकर सूँघें । माइग्रेन में लाभ करता है ।

आयुर्वेद के अनुसार सिर दर्द ग्यारह प्रकार का होता है-

1. **वातजन्य सिर दर्द-** इसमें वेदना अकारण एवं अचानक होती है । सिर को बाँधने तथा दबाने से राहत महसूस होती ।
2. **पित्तजन्य सिर दर्द-** इसमें आँखें जलती हैं । सिर में दाह, पीड़ा होती है । नाक में गर्मी महसूस होती है । ठण्डे उपचार से तथा रात में आराम मिलता है ।
3. **कफजन्य सिर दर्द-** सिर में भारीपन, ठंडापन तथा स्तब्धता होती है ।
4. **सन्निपातजन्य सिर दर्द-** वात, पित्त तथा कफजन्य सिर दर्द के लक्षण दिखते हैं ।
5. **रक्तजन्य सिर दर्द-** इसमें निर्बलता, चक्कर आना तथा स्वेदन के लक्षण ।
6. **क्षयजन्य सिर दर्द-** इसमें निर्बलता, चक्कर आना तथा स्वेदन के लक्षण दिखते हैं । वाष्प, कुंजर आदि से लक्षण उग्र हो जाते हैं ।
7. **कृमिजन्य सिर दर्द-** सिर में कुछ रेंगता, खाता तथा चुभती हुई वेदना महसूस होती है । नाक से खून तथा पीब निकलता है ।
8. **सूर्यावर्त सिर दर्द-** सूर्योदय के साथ आँख तथा भौंहों पर दर्द बढ़ता है तथा सूर्योदय के साथ कम होने लगता है । कभी ठण्डे तो कभी गर्म उपचार से लाभ होता है ।
9. **शंखक सिर दर्द-** यह कनपटी पर होता है । यह विष की तरह फैलकर गले को अवरूद्ध कर रोगी को तीन दिन में मार देता है । तीन दिन के बाद बच भी जाए तो असाध्य रोग माना जाता है ।
10. **अर्धवमेदक सिर दर्द-** अर्धवमेदक सिर दर्द में भौंह, कनपटी, कान, आँख तथा माथे पर 10-15 दिन के अन्तराल पर शॉक या बिजली जैसा तीक्ष्ण दर्द होता है । इस वेदना से कान एवं आँख की शक्ति कम हो जाती है ।
11. **अनन्त वात सिर दर्द-** अनन्त वात सिर दर्द कपाल के पीछे के हिस्से से शुरू होकर आँख, भौंह तथा कनपटी पर फैल जाता है । इसमें गाल काँपने लगते हैं । इसके अतिरिक्त मेनिनजायटिस, मेनरिज्म, सब-एकनायड, रक्तवाहिनियों के ट्यूमर की स्थिति में मस्तिष्क के अन्तःआवरण में विक्षोभ तथा सूजन में उत्पन्न सिर दर्द मेनिनजियल शिरोवेदना कहलाती है । इसमें सिर के पीछे का भाग तथा रीढ़ के ऊपरी हिस्से में तीव्र एवं गंभीर वेदना होती है । ग्रीवा की माँसपेशियाँ सख्त हो जाती हैं । सिर पर चोट लगने से आघातजन्य सिर दर्द होता है ।

दिमाग में ट्यूमर, घाव, जीर्ण रक्त के थक्के से उत्पन्न सिर दर्द मस्तिष्क के अन्दर के दबाव से परिवर्तनजन्य सिर दर्द कहते हैं । इसमें उल्टी होती है । खाँसने, चलने तथा उल्टी में सिर दर्द बढ़ता है । चलने से दर्द बढ़ता है जबकि लेटने से कम होता है । सिफलिस-जन्य सिर दर्द रात में बढ़ता है । श्वेत रक्त कोशिकाओं में वृद्धि पायी जाती है । गुर्दे की सूजन, पेशाब कम आना, धमनी, तीव्र ज्वर, जैसे- टायफाइड, मलेरिया, गठिया, मधुमेह, एकटक टी.वी. देखने, ग्लूकोमा, कनीनिका शोथ, आँखों का अति प्रयोग, नाक, गला, कान तथा दाँत के रोग, टॉन्सिलाइटिस, डिम्ब प्रणाली, गर्भाशय, आमाशय, हृदय एवं गुर्दे के रोग में तथा तंग टोप, टोपी या पगड़ी पहनने से द्वितीय सिर दर्द होता है । इसमें जिन रोगों के चलते सिर दर्द होता है उनका उपचार होने से सिर दर्द स्वतः ठीक हो जाता है ।

पतंजलि योगपीठ में पंचकर्म की शिरोधारा और योगग्राम में प्राकृतिक चिकित्सा से कई प्रकार के सिर दर्द के रोगियों को इससे मुक्ति मिली है।

योगग्राम, हरिद्वार

योग संदेश से साभार

www.thearyasamaj.org

सभा क्षेत्र की सूचनाएं एवं समाचार

आर्य समाजों के निर्वाचन- आर्यसमाज मालेगांव बाजार ता.तेल्हारा जि.अकोला – प्रधान श्री विजय महादेव श्री नाथमंत्री श्री योगेश गुलाब राव गावण्डे कोषाध्यक्ष श्री वासुदेव विश्वनाथ गावण्डे ।

आर्य समाज बेलखेड़ जि. आकोला – प्रधान श्री गजानन राव उंवरकर – मंत्री श्री शान्तिलाल गोमासे ।

सभा प्रधान पं. सत्यवीर शास्त्री जी का वेद प्रचार कार्य – माह मई–2013

२ मई-अमरावती - आर्यसमाज अमरावती के सदस्य श्री मुकुंदराव दौलतराव मेश्राम अमरावती की कन्या कु. कविता एम.बी.एस. का विवाह संस्कार पं. सत्यवीर शास्त्री के पौरोहित्य में पूर्ण वैदिक विधि से संपन्न हुआ ।

३ मई-पथरोट- आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश एवं विदर्भ के अंतरंग सदस्य तथा पथरोट आर्य समाज के उपप्रधान श्री ओमप्रकाश जी बोबडे के भतीजे श्री विशाल आनंदराव बोबडे का विवाह कु. मोनिका पवार के साथ वैदिक विधि से श्री रामदास जी बालखड़े के पौरोहित्य में संपन्न हुआ ।

१२ मई-अमरावती - कु. माया किशोरराव बड़े का शुद्धि संस्कार करके उसका विवाह संस्कार श्री ऋषिकेश प्रल्हादराव धर्माले के साथ पं. सत्यवीर शास्त्री के पौरोहित्य में संपन्न हुआ । नगर के मानद अधिकारी उपस्थित थे ।

१३ मई-अमरावती - शहर के प्रतिष्ठित व्यापारी व व्यावसायिक श्री ब्रिजलालजी आडवानी की नई दुकान का उद्‌घाटन ''विशाल-यज्ञ'' के साथ पं. सत्यवीर शास्त्री के पौरोहित्य में संपन्न हुआ । इसमें नगर के प्रतिष्ठित आर्यसमाजी उपस्थित थे ।

१६ मई-कारंजालाड- श्री मुरलीधरजी केलकर, सौ.संगीता परशुराम वेणीकर द्वारा निर्मित नये भवन का वास्तु संस्कार पं. सत्यवीर शास्त्री अमरावती के तत्वावधान में संपन्न हुआ । समाज भवन निर्माणर्थ स्थानीय आमदार जी ने दो लाख रूपये अनुदान देने की घोषणा की । वेदों की महानता इस विषय पर प्रधान-सभा का भाषण हुआ ।

२२ मई-परतवाड़ा - आर्यसमाज परतवाड़ा के स्व. अर्जुनराव जी मोहितीरे के सुपुत्र श्री संदीप का विवाह संस्कार पं. सत्यवीर जी शास्त्री के पौरोहित्य में पूर्णतः वैदिक विधि अनुसार संपन्न हुआ । आर्यसमाज परतवाड़ा के प्रधान श्री मदन कुमार जाश्रुर्णे आदि उपस्थित थे ।

परतवाडा-दि. १६ मई- आर्य समाज परतवाडा के सदस्य श्री रूपलाल जी मोहीतीरे का स्वर्ग वास सत्तर वर्ष की आयु में हुआ । आप के दो विटाभटटी के कारखाने हैं । आप परिवार के सभी संस्कार वैदिक विधि से करवाते थे । आपका अन्तेष्टि संस्कार पं. सत्यवीर शास्त्री के पौरोहित्य में दस किलो घी, दस किलो सामुग्री एक किलो राल एक किलो कपूर के साथ संपूर्ण मंत्रों के साथ संपन्न हुआ । अंन्त्य यात्रा में भोपाल, गुजरात, बंबई के स्नेहीजन पधारे थे ।

१३ परतवाडा १८ मई- आर्य समाज परतवाडा के पूर्व मंत्री चंदनराव जी मोहीतीरे की पौती भारती सुभाष राव केशवराव मोहीतीरे का विवाह संस्कार श्री केशव रामकृष्ण डोंगरे के साथ पूर्णतया वैदिक विधि से परतवाडा में संपन्न हुआ । विवाह संसार में परतवाडा-धोतरखेड़ा-पथरोट-परसापुर-अंजन गाँव के आर्यसमाज बड़ी संख्या में उपस्थित थे ।

धोतर खेडा:-२०मई- आर्य समाज परतवाडा के कोषाध्यक्ष श्री जीवनजी गोंडवले के रिश्तेदार श्री जनार्दन महादेवराव नंदेश्वर की सुपुत्री निकिता का विवाह संस्कार श्री योगेश सुरेशराव सहारे के साथ पं. सत्यवीर शास्त्री के तत्वावधान में श्री तेजव्रत गोवारे, श्री मदनजागुर्णो श्री शांताराम जी जाभुर्णे श्री जीवनजी गोंडवले ने पूर्ण वैदिक विधि से संपन्न करवाया । इस अवसर वैदिक विवाह की विशेषता पर पं. सत्यवीर शास्त्री का उद्‌बोधन हुआ फ। आशीर्वाद देने पाँच हजार स्त्री-पुरूष आये थे ।

२७ मई चांदूर बाजार - आर्य समाज परतवाडा के उपमंत्री श्री शांताराम जी जाभुर्णे की भानजी कु.चि.सौ. शितल बसंतराव नंदेश्वर का विवाह संस्कार श्री योगेश शेखर शिपी परतवाडा निवासी के साथ लगातार तीन घंटे के समय में वैदिक विधि से पं. सत्यवीर शास्त्री ने हर विधि का महत्व समझाते हुए संपन्न करवाया । इस नगर में पहला ही वैदिक संस्कार होने से लोगों ने उत्सुकता के साथ संस्कार देखा व सुना ।

आर्य समाज तेल्हारा २८-६-१३- आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ता जन्मजात आर्य समाजी अनेक सामाजिक संस्थाओं से संलग्न पूर्व आमदार श्री प्रभाकर राव सावरकर जी की बहू दीपिका संग्रामराव सावरकर का स्वर्गवास अत्याधिक हर्ष के कारण हुआ ।

दीपिका ने पुत्र को जन्म दिया । उसने पुत्र का मुख देखा उसे इतना हर्ष हुआ कि वेद स्वर्ग सिधार गई । दीपिका का अत्येंष्टि संस्कार पं. सत्यवीर शास्त्री सभा प्रधान ने संपन्न करवाया । इसमें आर्य समाज तेल्हारा के संतोष आर्य, हिवरखेड के भोपले, वेलखेडके उगले, वेलखेड के मंत्री शांतारामजी गोमाशे आदि पाँच हजार लोगों ने सहयोग किया । इस आकस्मिक दुर्घटना से सारा नगर दुःख सागर में डूब गया था ।

www.thearyasamaj.org

आर्य पर्वों की सूची

विक्रम सम्वत् २०६९-७० तदनुसार सन् २०१३

क्र.सं.	पर्व का नाम	चन्द्र तिथि	अंग्रेजी दिनांक	वार
1.	लोहड़ी	पौष शुक्ल,2 वि.2069	13/01/2013	रविवार
2.	मकर संक्रान्ति	पौष शुक्ल,3 वि.2069	14/01/2013	सोमवार
3.	गणतंत्र दिवस	पौष शुक्ल, 14 वि.2069	26/01/2013	शनिवार
4.	वसन्त पंचमी	माघशुक्ल, 5 वि. 2069	15/02/13	शुक्रवार
5.	सीताष्टमी	फाल्गुन कृष्ण, 8 वि.2069	5/3/2013	मंगलवार
6.	ऋषि पर्व–महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव	फाल्गुन कृष्ण, 10 वि.2069	7/3/2013	गुरूवार
7.	ज्योति पर्व–शिवरात्रि (ऋषि बोधोत्सव)	फाल्गुन कृष्ण, 14 वि.2069	10/03/2013	रविवार
	वीर पर्व–पं. लेखराम बलिदान दिवस	फाल्गुन शुक्ल, 3 वि.2069	14/03/2013	गुरूवार
9.	मिलन पर्व–नवसंस्येष्टि (होली)	फाल्गुन पूर्णिमा, वि.2069	26/03/2013	मंगलवार
10.	आर्य समाज स्थापना दिवस	चैत्र शुक्ल, 1 वि.2070	11/04/2013	गुरूवार
	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा/नवसम्वत्सर/ उगाड़ी गुड़ी पड़वा/चैती चांद			
11.	रामनवमी	चैत्र शुक्ल, 9 वि.2070	19/04/2013	शुक्रवार
12	वैशाखी	चैत्र शुक्ल, 4 वि .2070	13/04/2013	शनिवार
13	पं. गुरूदत्त विद्यार्थी जन्मदिवस	वैशाख शुक्ल, 3वि.2070	13/05/2013	सोमवार
14	हरितृतीया (हरियाली तीज)	श्रावण शुक्ल, 3वि.2070	09/08/2013	शुक्रवार
15	वेद प्रचार समारोह –श्रावणी उपाकर्म–रक्षा बंधन	श्रावण पूर्णिमा, वि. 2070	20/08/2013	मंगलवार
	हैदराबाद सत्याग्रह दिवस	भाद्रपद कृष्ण, 4 वि. 2070	24/08/2013	शनिवार
16	श्री कृष्णजन्माष्टमी	भाद्रपद कृष्ण, 8 वि.2070	28/08/2013	बुधवार
17	विजय दशमी/दशहरा	आश्विन शुक्ल,10 वि.2070	13/10/2013	रविवार
18	स्वामी विरजानन्द दण्डी जन्म दिवस	आश्विन शुक्ल,12 वि.2070	16/10/2013	बुधवार
19	क्षमा पर्व – दीपावली (ऋषि निर्वाणोत्सव)	कार्तिक अमावस्या वि. 2070	3/11/2013	सोमवार
20	बलिदान पर्व – स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष कृष्ण 6 ,वि.2070	23/12/2013	सोमवार

नोट : देशी तिथियों में घट–बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है ।

***

आर्य समाजों वं आर्य संस्थाओं से निवेदन है कि पर्वों का आयोजन उत्साह पूर्वक करने का कष्ट करें एवं समाचार देवें जिससे उन्हें प्रकाशित किया जा सके ।

अनिल शर्मा
मंत्री

सत्यवीर शास्त्री
प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा म. प्र. व विदर्भ नागपुर

www.thearyasamaj.org

प्रति, _____

_____

'तीर्थ' जिससे दुःखसागर से पार उतरें,
कि जो सत्यभाषण, विद्या, सत्सङ्ग,
यमादि, योगाभ्यास, पुरुषार्थ,
विद्यादानादि शुभ कर्म हैं,
उसी को तीर्थ समझता हूँ,
इतर जलस्थलादि को नहीं।

सत्यार्थ प्रकाश पृ.–५८६

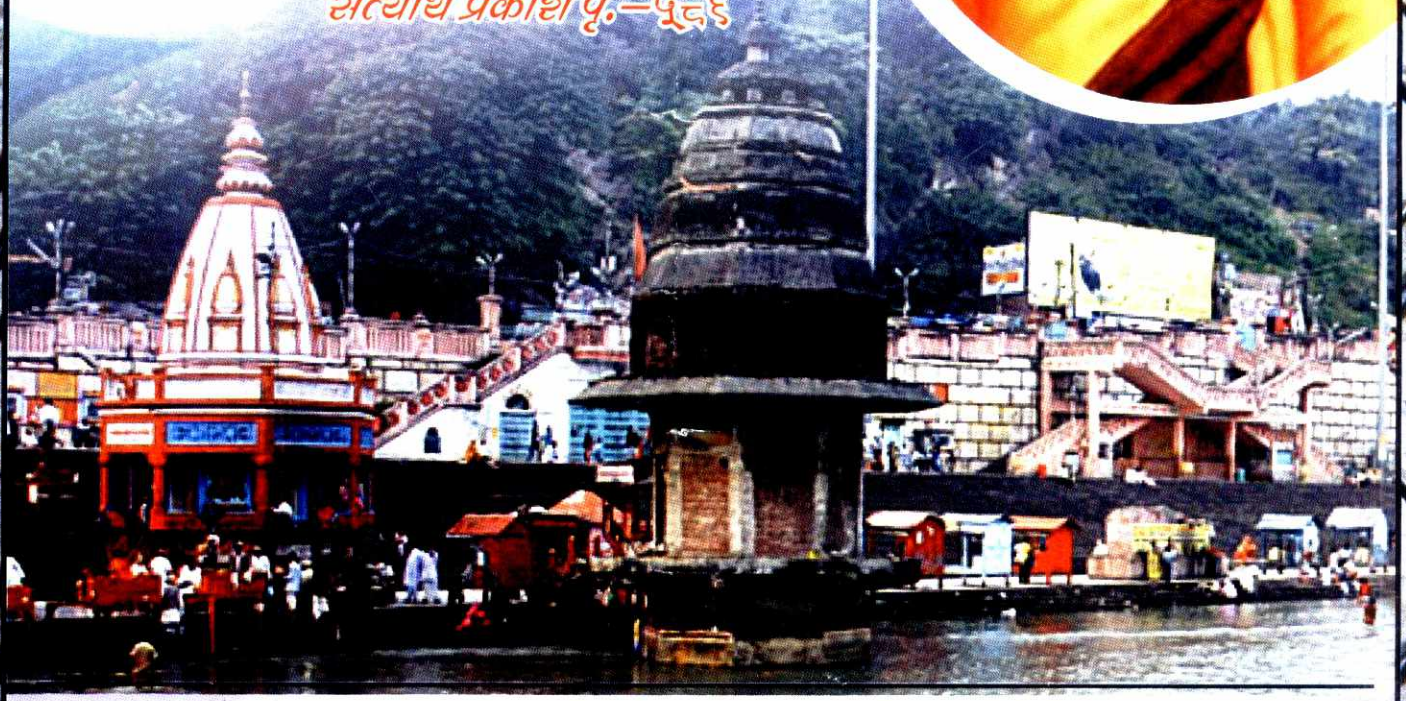

प्रकाशक : प्रा. अनिल शर्मा, प्रबंधक संपादक एवं मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा,
मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर, फोन: 0712–2595556 द्वारा उक्त सभा के लिए प्रकाशित एवं प्रसारित
मुद्रक : आर्य प्रिंटिंग प्रेस, जबलपुर, फोन : 0761–4035487